Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक - 33-34

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

16 सफ़र, 1446 हिज्री कमरी, 22 ज़हूर 1403 हिज्री शम्सी, 15-22 अगस्त 2024 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا ثُمَّ کَفَرُوۡا ثُمَّ اٰمَنُوۡا ثُمَّ کَفَرُوۡا ثُمَّ ازۡدَادُوۡا کُفۡرًا لَّمۡ یَکُنِ اللّٰہُ لِیَغۡفِرَ لَہُمۡ وَلَا لِیَہۡدِیَہُمۡ سَبِیۡلًا ○

(अल् निसा : **138**)

अनुवाद : वास्तव में, जो लोग ईमान लाए फिर उन्होंने इंकार किया, फिर ईमान लाए फिर इंकार कर दिया फिर कुफ़्र में बढ़ते चले गए, अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें क्षमा कर दे और सन्मार्ग पर ले आए।

अख़बार-ए-अहमदिया

रुहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

(1038) हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जोहनी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवयत है कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुदेबिया में हमे सुबह की नमाज़ बारिश में पढ़ाई जो रात से शुरू थी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ से फारिग हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों की ओर मुड़े और फ़रमाया, "क्या तुम जानते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या कहा है? " उन्होंने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। (आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया) सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फ़रमाया : आज सुबह मेरे बंदों में से मुझ पर कोई मेरा मोमिन है और दूसरा इंकार करने वाला है, अतः जिस ने कहा हम पर अल्लाह की कृपा और दया से हम पर बारिश हुई, तो वह मेरा मोमिन है और सितारों का काफ़िर और जिसने कहा कि अमुक-अमुक तारे के अमुक स्थान पर आने से हम पर बारिश हुई है, तो वह मुझ से इंकार करने वाला और सितारों पर ईमान लाने वाला है

(1039) हज़रत इब्ने उमर से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, गैब की पांच चाबियाँ हैं, केवल अल्लाह ही उन्हें जानता है, कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा। और गर्भ में क्या है, यह कोई नहीं जानता। और कोई नहीं जानता कि वह कल क्या कमाएगी। और कोई नहीं जानता कि उसकी मृत्यु किस देश में होगी। और कोई नहीं जानता कि बारिश कब होगी।

(सही बुखारी, किताब किताब अल् इस्तस्का, कादियान 2006 में प्रकाशित)

★ ★ ★

आपस में भाईचारा और प्रेम पैदा करें तथा क्रूरता और कलह का त्याग करो हर प्रकार के ठट्ठा और उपहास से पूर्णतः दूर हो जाओ, क्योंकि उपहास मन को सच्चाई से दूर करके कहीं का कहीं पहुंचा देता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

अपने जीवन में परिवर्तन लाएँ

असल बात यह है कि अल्लाह जो चाहता है वही करता है। जंगल को आबादी से भर देता है और बड़ी आबादी को उजाड़ देता है। बाबुल को क्या किया? जहाँ मनुष्य ने बसने की योजना बनाई वहाँ उजाड़ हो गया और उल्लुओं का निवास बन गया, और जहाँ मनुष्य चाहता था वीरान हो वह सारे संसार का केंद्र बन गया। इसलिए अच्छी तरह याद रखें कि सर्वशक्तिमान अल्लाह के बिना दवा और योजना पर भरोसा करना मूर्खता है। ऐसा जीवन चाहिए जो बिल्कुल नया हो। क्षमा की प्रचुरता हो। जिनके पास अनेक व्यवसाय हैं उन्हें अधिक डरना चाहिए। कामकाजी लोगों के अधिकतर कर्त्तव्य समाप्त हो गए हैं। इसलिए, कभी-कभी ज़ोहर और अस्र और मगरिब और ईशा को मिलाना जायज़ है। मैं जानता हूं कि यदि तुम हुक्काम से भी नमाज़ के लिए अनुमति लो तो वे दे देते हैं। और वरिष्ठ अधिकारियों के पास अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देश होते हैं। नमाज़ छोड़ने में स्वयं के कच्चेपन के अलावा ऐसा कोई बहाना नहीं है। बंदों के हक़ और अल्लाह के हक़ पर ज़ुल्म न करो।

भगवान के प्रियजनों के शामिल हो जाओ

दिन बहुत नाज़ुक हैं, हर किसी को अल्लाह तआला के प्रकोप से डरना चाहिए। अल्लाह नेक बंदों के अलावा किसी की परवाह नहीं करता। आपस में भाईचारा और प्रेम पैदा करो और क्रूरता और मतभेद को दूर रहो, क्योंकि मजाक इंसान के दिल को नेकी से दूर कर देता है। हर एक अपने आराम से अधिक अपने भाई के आराम को प्राथमिकता दे। अल्लाह तआला के साथ सच्चा मेल-मिलाप करो और उसकी आज्ञाकारिता पर लौट आओ। अल्लाह तआला का क्रोध धरती पर उतर रहा है और जो लोग इससे बचेंगे वे अपने सभी पापों से पूरी तरह पश्चाताप करेंगे और उसके प्यारों में आएंगे।

(मल् फ़ूज़ात, खंड 1, पृष्ठ 241 से 243, प्रकाशित कादियान 2018)

★ ★ ★

काफ़िरों को आश्चर्य हुआ कि उनमें से एक आदमी पर किस प्रकार वह्यी आ गई, यही बात आज भी कई मुसलमानों के साथ है वह कहते हैं की हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) ही आसमान से आएंगे और हमें अपमान और शर्म से बाहर निकालेंगे हम मेंसे ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं हो सकता जो हमारा इलाज करे

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आयत, اَکَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنۡ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلٰی رَجُلٍ مِّنۡہُمۡ 4 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

कुफ़्फ़ार को इस पर आश्चर्य हुआ कि उनमें से एक व्यक्ति को वह्यी कैसे हो सकती है। गीरी हुई कौम में सदैव यह भावना बनी रहती है कि हमारे यहां महापुरुष पैदा नहीं हो सकते। यह ऐसा था मानो कुफ़्फ़ार अपनी स्थिति से इतने निराश हो गए थे कि उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उनका इलाज उनके भीतर है। उनका मानना था कि बाहर से कोई आकर उन्हें पाले, उनका विकास करें और उनका इलाज करें। आज कई मुसलमानों की यही स्थिति है. वे यह भी कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम स्वर्ग से आएंगे और हमें अपमान और लज्जा से बाहर निकालेंगे। हमारे बीच से कोई ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं हो सकता जो हमें ठीक कर दे। इस मामले में उन्हे पूर्व की कौमो के साथ जिस हद तक अनुकूल हैं, उतनी ही निराशा और वही उपचार पद्धति है।वे लोग जिनके मन में या तो राष्ट्रीय विकास की कोई महत्वाकांक्षा नहीं थी या उनका मानना था कि बाहरी उपचार के बिना कुछ नहीं हो सकता, जब उनके भाई ने दावा किया कि मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा और तुम्हें विकास की ओर ले जाऊंगा, तो उनके आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह असंभव को संभव बनाने का दावा कैसे कर सकता है। दूसरी बात जो उनके लिए आश्चर्य की बात थी वह यह थी कि दावा करने वाले का दावा है कि मुझे लोगों को चेतावनी देने का आदेश दिया गया

पर 6 शेष पृष्ठ

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

ग़ज़्वा बनू मुस्तलिक़ के हालात-ओ-वाक़ियात का वर्णन तथा मुहर्रम के दिनों में दुरूद शरीफ़ पढ़ने और दुआएं करने का आदेश

बनू मुस्तलिक़ के सरदार हारिस बिन अबी ज़रार ने अपनी क़ौम और अरब वालों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग के लिए तैयार किया

और मदीना से क़रीबन छयानवे मील की दूरी पर लश्कर को एक स्थान पर जमा करना शुरू कर दिया

बनू मुस्तलिक़ के दिन मुस्लमानों का शआर يَامَنْصُوْرُ اَمِتْ اَمِتْ था

इन दिनों में अहमदियों को दुरूद शरीफ़ पढ़ने और मुस्लमानों की इकाई के लिए विशेष दुआओं की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए

अपनी हालतों को भी बेहतर करने और अल्लाह तआला से प्रेम में बढ़ने की तरफ़ भी हमें ख़ास तवज्जा देनी चाहिए

श्रीमान बोंजा महमूद साहिब शहीद आफ़ टोगो, श्रीमान रशीद अहमद साहिब साबिक़ मुआविन नाज़िर उमूर-ए-आमा, श्रीमान चौधरी मुतीऊ-र्रहमान साहिब नायब नाज़िर उमूर-ए-आमा,

श्रीमती मंज़ूर बेगम साहिबा पत्नी श्रीमान महमूद अहमद भट्टी साहिब आफ़ सरगोधा और श्रीमान मास्टर सआदत अहमद अशर्फ़ साहिब इब्न श्रीमान ख़ुशी मुहम्मद साहिब बॉडीगार्ड हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 जुलाई 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक़ या ग़ज़्व मुरेसी यह भी उसका नाम है। इस का वर्णन करूँगा। यह ग़ज़्वा कब हुआ। इसके विषय में जीवनी लेखकों का मतभेद है। अल्लामा इब्ने इसहाक़, तिब्री और इब्ने हशाम के नज़दीक ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक़ शाबान छः हिज्री में हुआ।

(अल् सीरतुल नब्विया इब्ने इसहाक़ पृष्ठ 439 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने हशशाम पृष्ठ 669-670 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 109 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

कुछ ने इसकी तारीख़ पाँच हिज्री वर्णन की है

(तब्क़ातुल् कुबरा ले इब्ने साद भाग 2 पृष्ठ 48 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(किताब अल् मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1 पृष्ठ 341 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

सही बुख़ारी में मूसा बिन उक़्बा से रिवायत है कि ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलक़ चार हिज्री को हुआ था अल्बत्ता शारह बुख़ारी अल्लामा इब्न-ए-हिज्र ने लिखा है कि यह क़लम की लग़्ज़िश है उन्होंने पाँच हिज्री लिखना चाहिए था लेकिन चार हिज्री लिखा गया।

(फ़तह अल् बारी भाग 7 पृष्ठ 430 किताबुल् मग़ाज़ी मक्तबा अल् सिफ़लिया)

इस ग़ज़्वा के विषय में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने भी अपनी तहक़ीक़ की है। कहते हैं कि ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलक की तारीख़ शाबान पाँच हिज्री है।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 557)

चूँकि यह ग़ज़्वा क़बीला ख़ुज़ाअह की एक शाख़ बनू मुस्तलिक़ के साथ हुआ इसलिए इस ग़ज़्वा को बनू मुस्तलक़ कहा जाता है और यह क़बीला एक कुँवें के पास रहता था जिसको मरीसीअ कहते थे। इस वजह से इस ग़ज़्वा का दूसरा नाम ग़ज़्व-ए-मरीसीअ भी है। मरीसीअ मदीना से करीबा एक सौ आठ मील की दूरी पर था।

(उद्धृत तब्क़ातुल् कुबरा भाग 2 पृष्ठ 48 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(उर्दू लुग़त भाग 17पृष्ठ 773 "मरहला" शब्द कर अंतर्गत)

बनू मुस्तलिक़ क़ुरैश के साथी थे। उन्होंने हब्शा नामी पहाड़ के दामन में जो मक्का के ज़ीरीं हिस्सा में है इकट्ठे हो कर हलफ़ लिया था कि हम लोग एक जान हो कर क़ुरैश के साथ रहेंगे। इसलिए उन लोगों को अहाब़ीश कहा जाने लगा और इसी मुआहिदे के तहत बनू मुस्तलिक़ ग़ज़्व-ए-अहद में कुफ़्फ़ार-ए-क़ुरैश के लश्कर में शामिल थे।

(सीरत ह़ल्बिया भाग 2 पृष्ठ 297 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस ग़ज़्वा का एक कारण तो यह था कि बनू मुस्तलिक़ इस्लाम दुश्मनी में बे-बाक हो गए थे और नियमित आगे ही बढ़ रहे थे। उन्हें कुफ़्फ़ार क़ुरैश की मुकम्मल ताईद और हिमायत हासिल थी। ग़ज़्व-ए-अहद में मुस्लमानों के ख़िलाफ़ लड़ाई में शिरकत की वजह से अब यह खुल कर मुस्लमानों से मुक़ाबले पर उतर आए थे और उनकी सरकशी में बहुत इज़ाफ़ा हो गया था। दूसरी बात यह थी कि मक्का की तरफ़ जाने वाले मर्कज़ी रास्ते पर बनू मुस्तलिक़ का कंट्रोल था। ये लोग मक्का में मुस्लमानों का अमल दख़ल रोकने के लिए मज़बूत रुकावट की हैसियत रखते थे।

(मरुयात-ए ग़ज़्वा बनी मुस्तलक़ अज़ इबराहीम बिन इबराहीम पृष्ठ 89 प्रकाशन आह्वा तुर्रास इस्लामी)

तीसरा और सबसे अहम कारण इस ग़ज़्वा का यह था कि : बनू मुस्तलिक़ के सरदार हारिस बिन अबी ज़रार ने अपनी क़ौम और अरब वालों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग के लिए तैयार किया और मदीना से क़रीबन छयानवे मील की दूरी पर लश्कर को एक स्थान पर जमा करना शुरू कर दिया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 344 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 226 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस के बारे में लिखा है। कहते हैं कि "क़ुरैश की मुख़ालिफ़त दिन-ब-दिन ज़्यादा ख़तरनाक सूरत इख़्तेयार करती जाती थी। वह अपनी रेशा दिवानी से अरब के बहुत से क़बायल को इस्लाम और बानी इस्लाम के ख़िलाफ़ खड़ा कर चुके थे लेकिन अब उनकी अदावत ने एक नया ख़तरा पैदा कर दिया

और वह यह कि हिजाज़ के वे क़बायल जो मुस्लमानों के साथ अच्छे ताल्लुक़ात रखते थे अब वह भी क़ुरैश की फ़िल्ना-अंगेज़ी से मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उठने शुरू हो गए। इस मुआमला में पहल करने वाला मशहूर क़बीला बनू ख़ज़ाह था जिनकी एक शाख़ बनू मुस्तलक ने मदीना के ख़िलाफ़ हमला करने की तैयारी शुरू कर दी और उन के रईस हारिस बिन अबी ज़रार ने इस इलाक़ा के दूसरे क़बायल में दौरा कर के कुछ और क़बायल को भी अपने साथ मिला लिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ : 557)

बनू मुस्तलक़ की इस तैयारी की सूचना जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बुरेदा बिन हुसैब असलमी रज़ियल्लाहु अन्हो को भेजा ताकि वह हालात मालूम कर के आएं। वह रवाना हुए और उनके चशमा पर उन्हें जा मिले। बुरेदा ने धोखेबाज़ क़ौम देखी जो न केवल ख़ुद जमा थे बल्कि उन्होंने इर्दगिर्द के लोगों का लश्कर भी जमा कर रखा था। इन लोगों ने हज़रत बुरेदा रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि तुम कौन हो? हज़रत बुरेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं तुम में से ही एक हूँ। मैं तुम्हारा लश्करकशी का सुनकर यहां आया हूँ। इस तरह अपनी हिक्मत-ए-अमली से उन लोगों की जंगी तैयारियों का अच्छी तरह जायज़ा लेकर हज़रत बुरेदा रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आए और उन लोगों के हालात बताए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को बुलाया और दुश्मन के बारे में ख़बर दी और इस्लामी लश्कर जल्द अज़ जल्द तैयार हो कर रवाना हो गया।

बनू मुस्तलिक़ की तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की की तफ़सील एक रिवायत के अनुसार इस प्रकार वर्णन हुआ है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना में नायब निर्धारित किया। इब्ने हशशाम ने हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम वर्णन किया है। इसी तरह हज़रत नुमान बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम भी वर्णन किया जाता है। बहरहाल यह लश्कर रवाना हुआ। इस्लामी लश्कर सात सौ अफ़राद पर आधारित था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो शाबान पाँच हिज्री को पीर के दिन मदीना मुनव्वरा से हिजरत की और इस्लामी लश्कर को लेकर बनू मुस्तलक़ की तरफ़ रवाना हुए। हज़रत मसऊद बिन हुनैन ग़ज़वा मरीसी में रास्ते के गाईड थे। इस सफ़र में मुस्लमानों के पास कल तीस घोड़े थे जिनमें से मुहाजेरीन के पास दस घोड़े थे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दो घोड़े थे। लिज़ाज़ और ज़रब। जिन मुहाजेरीन के पास घोड़े थे उनके नाम निम्नलिखित हैं । हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मिक़दाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो। और अंसार सहाबा के बीस घुड़सवारों में से पंद्रह के नाम मिलते हैं जिनमें हज़रत साद बिन मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उसेद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू अबस बिन जबर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत कताद बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उवैम बिन सायद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मअने बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद बिन ज़ैद अशहली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हारिस बिन हज़मा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबूकताद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू अबा बिन काअब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हुबाब बिन मनज़र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ियाद बिन लबीब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत फ़रवा बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मुआज़ बिन रफ़ाआ बिन राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो

बहरहाल इस की विस्तार में मज़ीद यह वर्णन हुआ है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बहुत से मुनाफ़िक़ीन भी निकले। वे इस से क़बल इस तरह किसी ग़ज़वा के लिए नहीं निकले थे और क्यों निकले? कहते हैं कि उन्हें जिहाद की रग़बत नहीं थी बल्कि वे माल-ए-ग़नीमत के लिए निकले थे कि अगर जीत हुई तो हमें माल-ए-ग़नीमत मिलेगा।

(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद भाग 4 पृष्ठ 344 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(अल् बदायह वल् नहाया भाग 4 पृष्ठ 169 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

(किताब अल् मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 341-343 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

(अल् साबा फ़ी तमीईज़ अल् सहाबा भाग 6 पृष्ठ 82 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

(इन्साईकलोपीडीया भाग 7 पृष्ठ 154 दारुस्सलाम)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में इस तरह वर्णन किया है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब इस वाक़िया की इत्तिला मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मज़ीद एहतियात के तौर पर अपने एक सहाबी बुरेदा बिन हुसैब नामी को दरयाफ़्त-ए-हालात के लिए बनू मुस्तलक़ की तरफ़ रवाना फ़रमाया और उनको ताकीद फ़रमाई कि बहुत जल्द वापस आकर वास्तविक घटना से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इत्तिला दें "। क्या हुआ? हक़ीक़त क्या है? इस बारे में बताएं। "बुरेदा गए तो देखा कि वाक़ई एक बहुत बड़ा इजतेमा है और निहायत ज़ोर शोर से मदीना पर हमला की तैयारियां हो रही हैं। उन्होंने फ़ौरन वापस आकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला दी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हसब-ए-आदत मुस्लमानों को पेशक़दमी के तौर पर दयार बनू मुस्तलक़ की तरफ़ रवाना होने की तहरीक फ़रमाई"। बजाय उसके कि वे पहले हमला करें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा पहले उनकी तरफ़ रवाना हो जाओ। "और बहुत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ चलने को तैयार हो गए बल्कि एक बड़ा गिरोह मुनाफ़ेक़ीन का भी जो इस से पहले इतनी संख्या में कभी शामिल नहीं हुए थे साथ हो गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने पीछे अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो या कुछ रिवायात की दृष्टि ज़ैद बिन हारिसा को मदीना का अमीर निर्धारित कर के अल्लाह का नाम लेते हुए शाबान पाँच हिज्री में मदीना से निकले। फ़ौज में केवल तीस घोड़े थे। जबकि ऊंटों की संख्या किसी क़दर ज़्यादा थी और इन्ही घोड़ों और ऊंटों पर मिल जुल कर मुस्लमान बारी बारी सवार थे"।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 557-558)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो मज़ीद वर्णन करते हैं कि "रास्ता में मुस्लमानों को कुफ़्फ़ार का एक जासूस मिल गया जिसे उन्होंने पकड़ कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस तहक़ीक़ के बाद कि वह वाक़ई जासूस है इस से कुफ़्फ़ार के विषय में कुछ हालात इत्यादि दरयाफ़्त करने चाहे परंतु उसने बताने से इंकार किया और चूँकि उसका रवैय्या मुश्तबा था इसलिए प्रचलित क़ानून-ए-जंग के अधीन" इस ज़माने में जो क़ानून-ए-जंग प्रचलित था "हज़रत उमर ने उसे क़तल कर दिया। और इस के बाद लश्कर इस्लाम आगे रवाना हुआ। बनू मुस्तलक को जब मुस्लमानों की आमद-आमद की इत्तिला हुई और यह ख़बर भी पहुंची कि उनका जासूस मारा गया है तो वह बहुत भयभीत हुए क्योंकि असल मंशा उनका यह था कि किसी तरह मदीना पर अचानक हमला करने का अवसर मिल जाए परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेदारमग़ज़ी की वजह से अब उनको लेने के देने पड़ गए थे। अतः वह बहुत भयभीत हो गए और दूसरे क़बायल जो उनकी मदद के लिए उनके साथ जमा हो गए थे वे तो ख़ुदाई तसर्रुफ़ के मातहत कुछ ऐसे ख़ायफ़ हुए कि फ़ौरन उनका साथ छोड़कर अपने अपने घरों को चले गए। परंतु ख़ुद बनू मुस्तलिक़ को क़ुरैश ने मुस्लमानों की दुश्मनी का कुछ ऐसा नशा पिला दिया था कि वह फिर भी जंग के इरादे से बाज़ नहीं आए और पूरी तैयारी के साथ इस्लामी लश्कर के मुक़ाबला के लिए आमादा रहे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 558)

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मरीसीअ पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए चमड़े का ख़ेमा लगाया गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र पत्नियों में से हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थीं। कुछ इतिहासकार ने हज़रत उम सल् मा रज़ियल्लाहु अन्हा का भी वर्णन किया है कि वे भी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ थीं लेकिन अल्लामा इब्ने हिज्र ने ऐसी रिवायात को कमज़ोर क़रार दिया है जिनमें हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ होने का वर्णन है। उनके नज़दीक बुख़ारी की रिवायत में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के शब्द हैं خَرَجَ سَهْمِي अर्थात मेरा क़ुरआ निकला। इस बात से पता चलता है कि इस ग़ज़वा में पवित्र पत्नियों में से अकेली हज़रत आयशा ही थीं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ गई थीं।

(फ़तह अल् बारी अनुवादक (फ़ैज़ अल् बारी) पारा 19 पृष्ठ 193 किताब अल् तफ़सीर प्रकाशन अस्हाब अल् हदीस लाहौर)

इस ग़ज़वा में मुस्लमानों का शआर क्या था। इब्ने हशशाम ने लिखा है कि :

ग़ज़वा बनू मुस्तलिक़ के दिन मुस्लमानों का शआर يَامَنْصُوْرُ اَمِتْ اَمِتْ था।

इस का अनुवाद यह है कि हे मदद याफताह शख़्स मार दे। मार दे। उस शआर के इस्तिमाल करने की हिक्मत यह थी कि मुस्लमानों और कुफ़्फ़ार के मध्य गलती न हो और रात के अंधेरे में भी मुस्लमान एक दूसरे को पहचान सकें।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 358 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(मरूवियात ग़ज़वा बनी मुस्तलक़ अज़ इब्राहीम बिन इब्राहीम पृष्ठ 109 प्रकाशन अल् आह्या तुर्रास अल् इस्लामी)

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने हशशाम पृष्ठ 673 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम की सफ़ बंदी की। मुहाजेरीन का झंडा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया गया। दूसरा कथन है कि हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया गया और अंसार का झंडा हज़रत साद बिन उबादः रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया कि लोगों में यह ऐलान करें अर्थात दुश्मन की फ़ौज के सामने यह ऐलान करें कि हे लोगो! कहो अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और इस के माध्यम से अपने नफ़ूस और अम्वाल महफ़ूज़ कर लो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसी तरह किया परंतु मुशरेकीन ने इंकार कर दिया। कुछ देर तीर-अंदाज़ी होती रही। पहले मुशरेकीन में से एक शख़्स ने तीर फेंका और मुस्लमान भी कुछ देर तीर-अंदाज़ी करते रहे फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया कि हमला करें। उन्होंने एक जान हो कर हमला किया। मुशरेकीन में से कोई भी भाग न सका। उनमें से दस मक़्तूल हुए और बाक़ी सारे क़ैदी हो गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके मर्द-ओ-ख़वातीन, औलाद और जानवरों को क़ैद कर लिया।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 345 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस की विस्तार में लिखा है कि "जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मरीसीअ में पहुंचे जिसके क़रीब बनू मुस्तलक का क़ियाम था और जो समुद्र के किनारे के निकट मक्का और मदीना के मध्य एक स्थान का नाम है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने डेरा डालने का हुक्म दिया और लाईने बनाने और झंडों की तक़सीम इत्यादि के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उम्र को हुक्म दिया कि आगे बढ़कर बनू मुस्तलिक़ में ये ऐलान करें कि अगर अब भी वे इस्लाम की दुश्मनी से बाज़ आ जाएं" दुश्मनी से बाज़ आ जाएं "और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हुकूमत को तस्लीम करले तो उनको अमन दिया जाएगा"। मज़हब की तबदीली का वर्णन नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हुकूमत को तस्लीम कर लें तो अमन दिया जाएगा "और मुस्लमान वापस लौट जाएंगे परंतु उन्होंने सख़्ती के साथ इंकार किया और जंग के वास्ते तैयार हो गए। यहाँ तक कि लिखा है कि सबसे पहला तीर जो इस जंग में चलाया गया वह उन्ही के आदमी ने चलाया "। अर्थात बनू मुस्तलिक़ के आदमी ने। "जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी ये हालत देखी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी सहाबा को लड़ने का हुक्म दिया। थोड़ी देर तक फ़रीक़ैन के मध्य ख़ूब तेज़ तीर-अंदाज़ी हुई जिसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को सहसा धावा कर देने का हुक्म दिया और इस अचानक धावे के नतीजे में कुफ़्फ़ार के पांव उखड़ गए परंतु मुस्लमानों ने ऐसी होशयारी के साथ उनका घेरा डाला कि सारी की सारी क़ौम कैद हो कर हथियार डालने पर मजबूर हो गई और केवल दस कुफ़्फ़ार और एक मुस्लमान के क़तल पर इस जंग का जो एक ख़तरनाक सूरत इख़्तेयार कर सकता था ख़ातमा किया गया"।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 558-559)

आज एक शहीद और कुछ मरहूमीन का भी मैंने वर्णन करना है। इसलिए यह असल ख़ुत्बा मुख़्तसर ही दे रहा हूँ जबकि

मुहर्रम के हवाले से जिसमें हम आजकल गुज़र रहे हैं दुआ की तरफ़ भी तवज्जा दिलानी चाहता हूँ।

यह एक दर्दनाक वाक़िया है जिसमें ज़ुलम-ओ-बरबरियत की इंतेहाई मिसाल क़ायम हुई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नवासे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ानदान के लोगों को शहीद किया गया लेकिन मुस्लमानों की बदक़िस्मती है कि इस से सबक़ लेने की बजाय यह ज़ुलम अब तक चल रहा है। मुहर्रम में शीया सुनी फ़साद या दहश्तगर्दी के हमलों के वाक़ियात बढ़ जाते हैं। इस में दोनों तरफ़ से जानें भी ज़ाए होती हैं। बल्कि इस फ़िर्कावारियात और ज़ाती मुफ़ादात की प्राप्ति की ख़्वाहिश ने मुस्लमान दुनिया में फ़ित्ना-ओ-फ़साद की सूरत पैदा की हुई है बल्कि सारा वर्ष ही उल्मा की तरफ़ से भी मुख़्तलिफ़ गिरोहों की तरफ़ से भी और हुकूमतों की तरफ़ से भी एक दूसरे के ख़िलाफ़ ज़ुलम-ओ-ताद्दी केमुज़ाहिरे हो रहे हैं। कोई अक़्ल उनको नहीं आती कि कुछ तो सीखे। कुछ तो ख़ौफ़ करें।

अल्लाह तआला ने जो इस फ़साद को ख़त्म करने के लिए अपने वाअदे के मुताबिक़ इंतेज़ाम फ़रमाया है उसे ये क़बूल करने के लिए तैयार नहीं हैं। यह मसीह मौऊद की बैअत में आना ही नहीं चाहते जो अकेले एक ज़रीया है। जो उम्मत को एक उम्मत बनाने का नज़ारा दिखा सकता है और फसादों को ख़त्म कर सकता है। मुस्लमानों की इकाई क़ायम हो कर उनकी साख क़ायम हो सकती है। यही एक माध्यम है। काश कि इन लोगों को समझ आए।

बहरहाल इन दिनों में अहमदियों को दुरूद शरीफ़ पढ़ने और मुस्लमानों की इकाई के लिए विशेष दुआओं की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए। अपनी हालतों को भीबेहतर करने और अल्लाह तआला से ताल्लुक़ में बढ़ने की तरफ़ भी हमें ख़ास तवज्जा देनी चाहिए। अल्लाह तआला सबको उस की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।

जैसा कि मैंने कहा था। कुछ शुहदा और मरहूमीन का वर्णन करना है। एक शहीद है यह जो शहीद हैं उनका नाम है बोंजा महमूद (Bondja Mahmoud) साहिब जो जमाअत तामांजवारे (Tamanjouare) टोगो के रहने वाले थे। 21 जून को दहश्तगरदों ने उनके घर में घुस कर उनको शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनकी उम्र चौंसठ वर्ष थी। पीछे रहने वालों में दो पत्नियाँ और चौदह बच्चे शामिल हैं।

नवीद नईम साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि टोगो के शुमाली रीजन के मर्कज़ी शहर के क़रीब यह जमाअत तामांजवारे है। यह इलाक़ा बुर्कीना फासो से मिलने वाली सरहद पर स्थित है। बोंजा महमूद साहिब को इस जमाअत के इबतिदाई मैंबरान में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। खेती बाड़ी कर के अपना रिज़्क़ कमाते थे। वहीं एक आरिज़ी रिहायश बनाई हुई थी जहां बारिशों के मौसम में बीवी बच्चों के साथ मुंतक़िल हो जाते थे। ख़ुशक मौसम में गांव आ जाते थे जो काफ़ी दूर फिर rainy season में वहां चले जाते थे। आजकल यह अपने फ़ार्म पर ही मौजूद थे जब 21जून की रात आठ बजे चार दहश्तगर्द उनके घर में दाख़िल हुए। टार्च जलाई। उनके बेटे जिसकी उम्र चौदह वर्ष थी उसने घर में रोशनी देखी तो फ़ौरन वहां आया और देखा कि उनके पिता को दहश्तगरदों ने घेरा हुआ है। इस पर वह भयभीत हो कर वहां से भाग गया। बहरहाल उसके बाद दहश्तगर्द ने मरहूम की ठोढ़ी की निचली तरफ़ बंदूक़ रखी और फ़ायर कर दिया और गोली नाक को चीरती हुई बाहर निकल गई। अवसर पर ही अल्लाह को प्यारे हो गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। दहश्तगर्द इस कार्रवाई के बाद वहां से रवाना हुए और घर के किसी और फ़र्द को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाया। लगता था कि उद्देश्य केवल उनको शहीद करना था इसलिए वे आए थे। वाक़िया की इत्तिला मिलने पर वहां के मिल्ट्री वाले भी पहुंच गए। हुकूमत के तो इख़्तयारात आजकल बहुत महिदूद हैं। दहश्तगरदों ने हर जगह क़बज़ा किया हुआ है। देह को फ़ौज ने अपने क़बज़ा में ले लिया और इर्द-गिर्द का जायज़ा लेने के बाद और अपनी मामूल की कार्रवाई करने के बाद अगले दिन देह परिजनों के सपुर्द कर दिया।

मामा बीलो साहिब जो इस इलाक़े के लोकल मिशनरी हैं, वह कहते हैं कि मरहूम इबतेदाई बैअत करने वालों में शामिल थे। बहुत इबतेदा में उन्होंने बैअत की थी। बैअत के बाद वे नमाज़ों और समस्त जमाअती प्रोग्रामों में बाक़ायदा शामिल होते। इसी तरह बाक़ायदगी से चंदा भी अदा करना शुरू कर दिया।

उनके हलक़ा मिशनरी जद्दामा (Djidama) ताहिर साहिब कहते हैं उनकी बैअत जो 2007 ई. में उन्होंने की थी उस के फ़ौरन बाद रमज़ान शुरू हो गया। बारिशों का मौसम था। फ़सल के लिए ज़मीन की तैयारी शुरू हो चुकी थी। गांव के चंद लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाना शुरू कर दिया कि अब तुम मुस्लमान हो गए हो रोज़ा रखोगे या खेती में काम करोगे क्योंकि रोज़े के साथ तो इतनी मेहनत कर नहीं सकते जबकि हम तो मेहनत करेंगे और हमारी फ़सलें अच्छी हो जाएँगी। उन्होंने जवाब दिया कि इस्लाम को मैंने दिल से क़बूल किया है इसलिए रोज़े तो ज़रूर रखने हैं। फ़सल का अल्लाह मालिक है। जितना काम कर सका कर लूँगा। जो मेरे नसीब में होगा वह मुझे मिलेगा वह ख़ुदा मुझे ज़रूर देगा। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि बारिशों का सिलसिला ही

इन दिनों में रुक गया और पूरा रमज़ान बारिश नहीं हुई। उन्होंने भी आराम से रोज़े रखे और ईद के दूसरे दिन बारिशें शुरू हो गईं और जिस तरह वहां के गांव में इस इलाक़े में फार्मिंग होती है, सारे लोग फिर बाहर निकले तो उन्होंने भी अपने खेतों का रुख किया। अल्लाह तआला ने उनको भी काम से रोक दिया जो उनका मज़ाक़ उड़ा रहे थे और अपने बंदे को भी इबादत की तौफ़ीक़ दी।

जमाअत के क़ियाम के चार वर्ष बाद मर्कज़ की तरफ़ से मस्जिद की तामीर का प्रोग्राम बना। ग़ैर अहमदियों ने उन पर बहुत ज़ोर लगाया कि इस मस्जिद की क्या ज़रूरत है। तुम हमारी मस्जिद में नमाज़ पढ़ लिया करो लेकिन उन्होंने कहा कि हम तो अपनी मस्जिद बनाएंगे और फिर यह मस्जिद बनने के बाद जब भी यह गांव में होते पांचों नमाज़ें मस्जिद में बाक़ायदगी से अदा करते। उनके बड़े भाई याक़ूब साहिब वर्णन करते हैं कि बड़े नर्म-दिल थे। कभी किसी का बुरा नहीं चाहा। ख़ानदान का कोई भी मसला जब किसी से न सुलझता तो वे उनके पास आता और मरहूम बड़ी आसानी से उस को हल कर देते।

अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी औलाद और नसल को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। इन इलाक़ों में दहशतगरदों का भी अल्लाह तआला ख़ातमा फ़रमाए और अमन-ओ-अमान की सूरत-ए-हाल क़ायम फ़रमाए। यह सूरत-ए-हाल जो कहने को तो यही है कि लोगों में आपस में लड़ाईयां हैं या मुस्लमानों के गिरोहों ने फ़ित्ना मचाया हुआ है लेकिन इस सब कुछ की पुश्तपनाही बड़ी ताक़तों की तरफ़ से हो रही है जो अपने मुफ़ादात के लिए इन मुल्कों में दहशतगर्दी को हवा देती हैं और फिर ख़ुद ही अमन क़ायम करने के हवाला देकर हमदर्द बनने की भी कोशिश करती हैं। अगर ये लोग उनकी पुश्तपनाही न करें तो ये तंज़ीमें चल ही नहीं सकतीं और मुस्लमानों को अक़ल नहीं आ रही कि हम क्या कर रहे हैं। कुछ मुस्लमान तंज़ीमें हैं, कुछ सयासी लोग भी हैं जो इन दहशतगरदों में शामिल हो चुके हैं।

अगला जो वर्णन है वह है श्रीमान रशीद अहमद साहिब साबिक़ मुआविन नाज़िर उमूर-ए-आमा जो नूर हुसैन साहिब के बेटे थे। पिछले दिनों छयासी वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

ये कादियान में पैदा हुए। पैदाइशी अहमदी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पिता नूर हुसैन साहिब के द्वारा हुआ जिन्हों ने 1924 ई. में ख़िलाफ़त सानिया के दौर में बैअत करके अहमदियत में शमूलियत की सआदत पाई थी। रशीद साहिब ने इबतेदाई तालीम कादियान में हासिल की। क़ायम-ए-पाकिस्तान के बाद मैट्रिक करने के बाद जमाअती ख़िदमात का आग़ाज़ किया। 1998 ई. में जबकि उनकी रिटायरमैंट हो गई थी लेकिन री एंप्लॉई किए गए और 2021 ई. तक जब तक सेहत ने इजाज़त दी उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम की मजमूई तौर पर जमाअती ख़िदमत का सिलसिला तक़रीबन पैंसठ वर्ष पर आधारित है।

बेशुमार विशेषताओं के हामिल थे। रोज़ का काम रोज़ करने के आदी थे। सिलसिला के इंतेहाई वफ़ादार और ज़िम्मेदार होने के इलावा तमाम जमाअती उमूर राज़दारी के साथ सरअंजाम देते थे। वक़्त की पाबंदी नुमायां वस्फ़ था। निज़ाम-ए-वसीयत में शामिल हुए और चंदाजात की अदायगी की बहुत फ़िक्र रहती थी। अव्वल वक़्त में चंदा अदा किया करते थे। हर जमाअती तहरीक में हिस्सा लेने की कोशिश करते। रिश्तेदारों से अपनाईयत का ताल्लुक़ रखा। ज़रूरतमंदों की ख़ामोशी से मदद करते ख़िलाफ़त से उनको ख़ास इशक़ और ताल्लुक़ था। ख़िलाफ़त सानिया से लेकर ख़िलाफ़त ख़ामसा तक सारे दौरों में उन्होंने मुख़्तलिफ़ ख़िदमात की तौफ़ीक़ पाई और बड़ी वफ़ा से ख़िदमत सरअंजाम दी। बड़ी ख़ामोशी से काम करने वाले और बड़े बेलौस ख़िदमतगुज़ार थे। 1974 ई. और 1984 ई. के भयानक समय में भरपूर तौर पर मुख़ालेफ़ाना हालात का सामना करने की भी उनको तौफ़ीक़ मिली। 74 ई. के मुख़ालेफ़ाना हालात में पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और गिरफ़्तार करके पुलिस फैसलाबाद ले जा रही थी कि चैनयोट में मुख़ालेफ़ीन के हुजूम ने बसपा हमला कर दिया जिसमें उनको पुलिस ले जा रही थी। पुलिस और बस के अन्य मुसाफ़िर भाग गए पुलिस वाले भी उनको छोड़ के दौड़ गए। पुलिस ने उनको हथकड़ी लगाई हुई थी। जलूस मे शामिल लोगों ने हथकड़ी लगे होने की हालत में उन्हें चाक़ूओं के वार से शदीद ज़ख़्मी कर दिया। मोजज़ाना रंग में जान बची। कई माह हस्पताल रहे। इस के बाद दुबारा जेल मुंतक़िल कर दिया गया। इसी वजह से उनकी उंगलियां भी कट गई थीं। उनके चेहरे पर भी घाव थे और काफ़ी देर तक बोलना भी उनके लिए मुश्किल था लेकिन बहरहाल अल्लाह तआला ने उनकी जान बचाई।

सितंबर 1979 ई. में रब्वाह में बे-बुनियाद इल्ज़ाम के तहत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रहमहुल्लाह के ख़िलाफ़ और दीगर ओहदेदारान के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दर्ज हुआ। इस में रशीद अहमद साहिब का नाम भी था और एक लंबा अरसा इस मुक़द्दमे की पैरवी होती रही। रशीद साहिब के ख़िलाफ़ अन्य तीन जमाअती ओहदेदारान के हमराह 1987 ई. में एक और मुक़द्दमा पुलिस स्टेशन रब्वाह में क़ायम हुआ और कई वर्ष तक उनको अदालतों के चक्कर लगाने पड़े।

उनकी बेटी अम्तुल सुबूर कहती हैं कि बाजमाअत नमाज़ के पाबंद, हुक़ूकुल् ईबाद का ख़्याल रखने वाले, दूसरों की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझने वाले और कई बार ऐसा हुआ कि केवल मामले को ख़त्म करने के लिए अपना हक़ भी छोड़ देते थे। उनकी बेटी ने मज़ीद बताया कि वालिदा की वफ़ात के बाद मैं ने फ़ैसला किया कि उनके पास चली जाऊं और अपने बच्चों के साथ उनके पास आ गई तो आते ही उन्होंने मुझे नसीहत की कि अगर मेरे पास रहना है तो बच्चों को समझा दो कि नमाज़ बाजमाअत की अदायगी की पाबंदी करेंगे। जमाअती सरगर्मियों में हिस्सा लेंगे। शाम के बाद घर से बाहर नहीं जाऐंगे और ओहदेदारान-ए-जमाअत की तरफ़ से बुलाए जाने पर इंकार नहीं करेंगे। कहती हैं इस तर्बीयत का मुझे बहुत फ़ायदा हुआ। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनके बच्चों और नसल को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ आता फ़रमाए।

अगला वर्णन है। श्रीमान चौधरी मुतीउल् रहमान साहिब नायब नाज़िर उमूर-ए-आमा इब्न चौधरी अली अकबर साहिब जो पिछले दिनों 89 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

पैदाइशी अहमदी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरंभ उनके पिता चौधरी अली अकबर साहिब के माध्यम से हुआ जिन्हों ने फ़रवरी 1916 ई. में ख़िलाफ़त सानिया मैं बैअत की सआदत पाई। क़ायम-ए-पाकिस्तान के बाद उनके पिता चौधरी अली अकबर साहिब को बतौर नायब नाज़िर तालीम ख़िदमत सिलसिला की तौफ़ीक़ भी मिली। चौधरी मुतीउर्हमान साहिब ने इबतेदाई तालीम कादियान से हासिल की। पाकिस्तान के आरंभ के बाद तालीम मुकम्मल करके शिक्षा विभाग से वाबस्ता हो गए। रिटायरमैंट के बाद ख़ुद को जमाअती ख़िदमत के लिए पेश किया और बतौर नायब नाज़िर उमूर-ए-आमा पच्चीस वर्ष से अधिक समय से और अंतिम सांस तक ख़िदमत सिलसिला की तौफ़ीक़ पाई। बड़े ख़ामोश स्वभाव वाले और काम करने वाले इन्सान थे।

चौधरी मुतीउर्हमान साहिब बेशुमार विशेषताओं के हामिल थे। इबतेदाई उम्र में निज़ाम-ए-वसीयत में शामिल होने की सआदत पाई। वसीयत का हिसाब बड़ी बाक़ायदगी से साफ़ रखते थे। वक़्त के पाबंद थे। बाजमाअत नमाज़ों की अदायगी में बाक़ायदा, जमाअती चंदा जात अव्वल वक़्त में अदा करने वाले थे। इलमी ज़ौक़ नुमायां था। सादा तबीयत के मालिक थे। हर किसी से दोस्ताना और मुहब्बत का ताल्लुक़ था। कभी किसी साथी कारकुन से अगर कोई बात हो जाती अर्थात कोई नाराज़गी वाली बात होती तो पहले सुलह का हाथ बढ़ाते। दफ़्तरी तौर पर जो भी फ़रीज़ा उनके सपुर्द किया जाता उसको जल्द से जल्द मुकम्मल करते। काम pending करने को सख़्त नापसंद करते और आख़िर तक उन्होंने अपने इस वस्फ़ को जारी रखा। कभी दफ़्तर का काम pending नहीं होने दिया। मरहूम ख़िलाफ़त से वाबस्ता रहने और निज़ाम जमाअत की इताअत की हमेशा तलक़ीन किया करते थे और अपने क़रीबियों को और एक उनकी बेटी थी उसको भी, बच्चों को भी हमेशा यही कहते थे कि ख़िलाफ़त की इताअत में ही बरकतें हैं।

उनकी पत्नी भी चंद वर्ष पूर्व वफ़ात पा गई थीं। एक ही बेटी है उनकी जिसके ख़ावंद भी वफ़ात पा गए हैं और ये सारे सदमे उन्होंने बड़े सब्र से बर्दाश्त किए। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। मरहूम चौधरी एजाज़ अल् रहमान साहिब साबिक़ सदर अंसारुल्लाह यू.के के चचा थे।

अगला वर्णन है मंज़ूर बेगम साहिबा जो महमूद अहमद भट्टी साहिब मरहूम सरगोधा की पत्नी थीं, पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह हज़रत चौधरी गुलाम हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बहू थीं।

उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके ताया चौधरी गुलाम नबी उलवी साहिब और चचा श्रीमान चौधरी अता मुहम्मद उलवी साहिब के ज़रीया हुआ। इन दोनों बुज़ुर्गों ने चीचा वतनी में एक वाद-विवाद सुनने के बाद बैअत की थी। मरहूमा के पिता चौधरी मुहम्मद अब्दुल्लाह उलवी साहिब ने बाद में तीन बरस तहक़ीक़ करने के बाद 1935 ई. में अहमदियत क़बूल की। उनके पति महमूद अहमद भट्टी मरहूम और बेटे ताहेर महमूद भट्टी साहिब को अहमदियत की खातिर जेल जाने का सौभाग्य

भी मिली। मरहूमा के एक भाई नसीर अहमद उलवी साहिब को 1991 ई. में अहमदियत के नाम पर सिंध के इलाक़ा दौड़ में शहीद भी कर दिया गया था। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में तीन बेटियां और सात बेटे शामिल हैं। उनके एक बेटे आबिद महमूद भट्टी साहिब वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं। मुरब्बी हैं। प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया और जमाअत तनज़ानिया के नायब अमीर हैं। और जो मैदान-ए-अमल में होने की वजह से वालिदा के जनाज़े में शामिल नहीं हो सके।

इस चक की साबिक़ सदर लजना क़य्यूम साहिबा हैं कहती हैं कि पंद्रह बरस बतौर सदर लजना मुझे ख़िदमत का सौभाग्य मिला इस अर्से में मैं ने मरहूमा की बेशुमार विशेषताओं देखी हैं। नमाज़ रोज़े की पाबंद, पांचों वक्त की नमाज़ के बहुत एहतिमाम से अदा करतीं। जब तक लजना को मस्जिद आने की इजाज़त थी बाक़ायदगी से जुमा पर आतीं और हमेशा पहली सफ़ में बैठतीं। अब तो वहां पाबंदियां हैं औरतें मस्जिद में जा नहीं सकतीं जुमा पढ़ने के लिए भी न ईद पढ़ने के लिए। घरों में बैठी हैं और बेचैन रहती हैं कि कब हमारे हालात ठीक हों। और कब हम मस्जिदों में जा सकें। उनके लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला पाकिस्तान के लोगों पर रहम फ़रमाए। हर इजलास में ये शामिल होती थीं। रमज़ान में बाक़ायदगी से लजना के साथ तरावीह मस्जिद में अदा करतीं। हमेशा अपने बच्चों और उनके बच्चों को भी मस्जिद से जोड़े रखा। बच्चों की बहुत अच्छी तर्बीयत की। हमेशा बच्चों को जमाअती ख़िदमत की तरफ़ रखा।

क़ैसर महमूद भट्टी साहिब उनके बेटे चंदा जात की अदायगी के हवाले से लिखते हैं कि हमेशा अपने जेब ख़र्च से ख़ुद अदा करतीं । वसीयत की रक़म भी अपनी जमा पूँजी से अदा की। हमने उनको इसरार किया कि चंदा हिस्सा जायदाद जो है हम अदा कर देते हैं लेकिन उन्होंने साफ़ इंकार कर दिया कि मैंने अपने ख़ुदा की राह में वसीयत की है यह मेरा हक़ है। दीन के लिए ख़ास ग़ैरत और हमीयत रखती थीं। 1989 ई. में गांव में जमाअत के हालात कशीदा हुए और मुआनेदीन ने गांव में अहमदी घरों को आग लगाना और मस्जिद पर क़ब्ज़ा करना चाहा तो उन्होंने अपने पति को कहा और अपने बेटों को कहा कि आप लोग मस्जिद की तरफ़ जाएं। मैं अकेली घर की हिफ़ाज़त कर लूँगी। इन दिनों उनके पति और उनके बेटों को पुलिस ने गिरफ़्तार भी कर लिया लेकिन इस तरफ़ से कोई परेशानी नहीं हुई बल्कि उनके ये बेटे कहते हैं कि ये सारी सारी रात रो-रो के दुआ किया करती थीं कि अल्लाह तआला मेरे ख़ावंद और बच्चों को जमाअत के साथ इस्तक़ामत से खड़ा रहने की तौफ़ीक़ दे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

अगला वर्णन श्रीमान मास्टर सआदत अहमद अशर्फ़ साहिब का है जो श्रीमान ख़ुशी मुहम्मद साहिब बॉडीगार्ड हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे थे। पिछले दिनों तिरासी वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा तीन बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। एक बेटे उसमान अहमद ताले साहिब मुरब्बी सिलसिला सीरालियोन हैं जो मैदान-ए-अमल में होने की वजह से उनके जनाज़े में शामिल नहीं हो सके।

उसमान साहिब मुरब्बी सिलसिला लिखते हैं कि पिता साहिब पेशे के लिहाज़ से उस्ताद थे। 1963 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु की तहरीक पर लब्बैक कहते हुए बशीराबाद सिंध में हिज्रत कर आए और तालीमुल् इस्लाम हाई स्कूल में अरबी पढ़ाने पर निर्धारित हो गए। बशीर आबाद सिंध हिज्रत से क़बल दारुल हिम्मत ग़र्बी में रहा करते थे। उनका हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजीकी रज़ियल्लाहु अन्हो से बहुत प्यार का ताल्लुक़ था। कहते हैं मौलाना राजीकी सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो मेरे पिता को अपना मुँह बोला बेटा कहते थे और उनकी नेक तबीयत की वजह से उनसे बड़ा प्यार का सुलूक करते थे। ये लिखते हैं कि मौलवी-साहब उनसे ज़ाती काम भी करवा लिया करते थे। जब भी कोई मौलाना राजीकी सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो को दुआ की ग़रज़ से नज़राना की रक़म देकर जाता तो मेरे पिता को बुला कर यह कहा करते थे कि यह रक़म दारुल ज़याफ़त में जमा करवा दो और इस की रसीद ले आना। चंदे में दे दिया करते थे। कहते हैं कि एक दिन गर्मी के मौसम में हज़रत मौलाना राजीकी सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो घर तशरीफ़ लाए और दरवाज़ा खटखटाया। पिता साहिब बाहर निकले। मौलाना साहिब से अर्ज़ की कि इतनी गर्मी में आप क्यों तशरीफ़ लाए हैं। मुझे कहला भेजा होता मैं हाज़िर हो जाता। इस पर मौलवी-साहब ने उत्तर में पिता साहिब को कहा कि अगर तुम्हें पैसों की ज़रूरत थी तो मुझे ख़ुद बता देते। हज़रत मौलाना राजीकी सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने मज़ीद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे आदेशित फ़रमाया है कि सआदत को पैसों की ज़रूरत है। जाओ और उसे पैसे दे के आओ और हज़रत मौलाना राजीकी सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने जेब से रुपय निकाले और उनको दिए और चले गए। इस तरह उनका भी अल्लाह तआला से ताल्लुक़ था कि स्वयं ही अपने एक दूसरे नेक बंदे के दिल में डाला कि जाओ और उस की मदद करो।

इताअत-ए-ख़िलाफ़त का मयार उनका क़ाबिल रशक था। मुरब्बी साहिब कहते हैं कि कुछ अरसा क़बल ख़ाकसार रुख़स्त लेकर उनसे मिलने पाकिस्तान गया। उनकी तबीयत देखकर मैंने कहा कि मुनासिब समझें तो मज़ीद रुख़स्त ले लो तो इस पर बड़ी सख़्ती से आपने फ़रमाया कि आइन्दा ऐसी बात न सोचना। न अपनी ज़बान पर लाना। ख़लीफ़ा वक़्त ने तुम्हें एक मोर्चे पर बिठाया है वहीं बैठे रहो और जमाअत की ख़िदमत और हिफ़ाज़त आख़िरी सांस तक करते रहो। हमेशा बहन भाईयों को तलक़ीन किया करते थे कि सफ़र में जब भी जाओ दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहना। لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہ का जाप करते रहना।

उन्होंने उनका एक वाक़िया मुबश्शिर गोन्दल साहिब के हवाले से लिखा है कि जब बी ऐड का इमतेहान दे रहे थे तो अरबी का पर्चा काफ़ी मुश्किल था और निसाब से हट के कुछ बातें थीं तो कहते हैं पिता साहिब ने कुछ देर के बाद एक ज़ायद शीट ली और लिखते रहे। इस के बाद फिर दुबारा शीटें लेते रहे। काग़ज़ मज़ीद लेते रहे। साथियों ने इस्तफ़सार किया कि हमारे से तो जो काग़ज़ दिए गए थे पर्चा हल करने के लिए वह भी पूरे नहीं हुए, तुम क्या लिख रहे थे? तो उन्होंने जवाब दिया कि मुझे जो आता था वह तो मैं ने लिख दिया। इस के बाद में फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क़सीदा يَا عَيْنَ فَيْضِ اللّٰهِ وَالْعِرْفَانِ के जो सत्तर अशआर थे वे भी लिख आया हूँ ताकि जो भी उनको पढ़ेगा उस को कम से कम तब्लीग़ तो हो जाएगी। पास तो पता नहीं मैंने होना है कि नहीं होना।examiner पास करता है कि नहीं, कम से कम शेअर पढ़के उसको एक एहसास तो पैदा होगा कि किसी अहमदी ने लिखा है या किस के ये शेअर हैं और फिर तहक़ीक़ करेगा और इस लिहाज़ से तब्लीग़ का रस्ता खुलेगा। बहरहाल अल्लाह तआला ने भी फ़ज़ल किया कि इस इमतेहान में केवल तीन लोग पास हुए और पिता साहिब उनमें से एक थे। कहते हैं ये केवल अल्लाह तआला का फ़ज़ल और क़सीदे की बरकत थी।

नवाफ़िल, इबादात और रोज़ों का अक्सर एहतेमाम करते। क़ुरआन-ए-मजीद की मुहब्बत और तिलावत का बहुत शग़फ़ था। हमेशा क़ुरआन-ए-करीम की कुछ सूरतों को गुनगुनाते हुए सुना। क़सीदा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हमेशा पढ़ते हुए सुना। अक्सर क़सीदा पढ़ते हुए उनकी आँखों से आँसू जारी हो जाते। कुतुब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अध्ययन करते और सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वाक़ियात सुनाते। विशेषता हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल राजी की सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो के वाक़ियात अपने शागिर्दों को ज़रूर सुनाया करते थे। पुरजोश प्रचारक थे ये और मुस्तइद शख़्सियत के हामिल थे। जमाअती प्रोग्रामों में हमेशा बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी ये नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ आता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

है। अर्थात कि कुछ पुरानी चीजों को छोड़ें और कुछ नई चीजों को अपनाएं। ऐसे लोगों को यह हमेशा आश्चर्य होता है कि रसूल मौजूदा सिस्टम को तोड़ कर नया सिस्टम अपनाने के लिए कहता है।

कुफ़्फ़ार की ये दोनों बाते विरोधाभासी हैं। एक तरफ़ तो वे इतने निराश हैं कि उन्हें लगता है कि हममें से कोई भी हमारा इलाज करने नहीं आ सकता और दूसरी तरफ वे इस बात पर लड़ते हैं कि हमारा निज़ाम क्यों बदलते हो। यह पतित कौम की स्थिति है। वे चाहते हैं कि कुछ भी न छोड़ा जाए और कुछ भी न किया जाए। व्यक्ति को बाहर से आकर उनकी मौजूदा व्यवस्था को कायम रखते हुए उन्हें प्रगति की ओर ले जाना चाहिए। उन्हें पढ़ाई नहीं करनी पड़े, मेहनत नहीं करनी पड़े, बुरी चीजें नहीं छोड़नी पड़े। की अपेक्षा एक व्यक्ति बाहर से आएगा और दूसरों को मार डालेगा और सब कुछ उनका हो जाएगा। वे यह नहीं सोचते कि यदि उनकी पहली व्यवस्था सही होती तो वे अपमान और अपमान के गर्त में क्यों पड़ते? इसलिए उनकी मौजूदा व्यवस्था को तोड़ने से ही काम चल सकेगा।

(तफ़सीर-ए-कबीर, खण्ड 3, पृष्ठ 16, प्रकाशित कादियान 2010)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

ग़ज़वा बनू मुस्तलक़ के हालात-ओ-वाक़ियात का वर्णन तथा जलसा सालाना बर्तानिया और जल्से में शामिल होने वालों के लिए दुआओं की तहरीक

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब यह देखा कि उनके आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू मुस्तलक की रईस ज़ादी को पत्नी का सम्मान अता फ़रमाया है तो उन्हों ने इस बात को खिलाफ-ए-शान-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समझा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ससुराल वालों को अपने हाथ में क़ैद रखें

और इस तरह एक सौ घराने अर्थात सैंकड़ों क़ैदी बिना फिद्या सहसा आज़ाद कर दिए गए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलिक़ से मुज़फ़्फ़र-ओ-मंसूर, कामयाब-ओ-कामरान मदीना वापस तशरीफ़ लाए

अगले जुमा इन शा अल्लाह तआला बर्तानिया का जलसा सालाना भी शुरू होगा। इसके लिए भी दुआ करें

अल्लाह तआला हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए और समस्त कर्मियों को उच्च अख़लाक़ दिखाते हुए और क़ुर्बानी की भावना से अपने फ़रायज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

श्रीमती सलीमा बानो साहिबा पत्नी श्रीमान मुहम्मद हमीद कौसर साहिब नाज़िर दावत इलल्लाह शुमाली हिंद कादियान, श्रीमान नूरुल हक़ मज़हर साहिब आफ़ लाहौर और श्रीमती अमतुल -हफ़ीज़ निगहत साहिबा पत्नी श्रीमान मुहम्मद शफ़ी साहिब मरहूम आफ़ रब्वाह का की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 जुलाई 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलक़ का वर्णन पिछले ख़ुतबा में हुआ था। इस की मज़ीद विस्तार अहादीस और तारीख़ में मिलती है।

सही बुख़ारी में इस हमले का विस्तार इस तरह वर्णन हुआ है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू मुस्तलक पर हमला किया तो वे ग़ाफ़िल थे और उनके मवेशियों को चश्मे पर पानी पिलाया जा रहा था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनमें से लड़ाई करने वालों को क़तल किया और उनकी औलाद को क़ैद कर लिया और इसी रोज़ जुवैरा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मिलीं। रावी ने कहा यह वाक़िया हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझे बताया और वे इस लश्कर में थे।

(सही बुख़ारी किताब अल् इत्क बाब मिन मलिक मिन अर्बिल रकीका हदीस : 2541)

इतिहासकार और सीरत निगार ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलक़ में इस हमला की तफ़सीलात वर्णन करते हुए दोनों रिवायात को इस तरह वर्णन कर जाते हैं कि गोया बुख़ारी की रवायात में बनू मुस्तलक़ के हमला की कैफ़ीयत के वर्णन में मतभेद है क्योंकि बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ मुस्लमानों ने अचानक ग़फ़लत की हालत में हमला किया था और रवायात का यह मतभेद बुख़ारी की शरह करने वाले अल्लामा इब्ने हिज्र के सामने भी था। इसलिए अल्लामा इब्ने हिज्र ने दोनों तरह की रिवायात में जोड़ करते हुए लिखा है कि इस बात की संभावना मौजूद है कि जब इस्लामी लश्कर ने चशमा पर अचानक उन्हें आ घेरा तो वे कुछ देर डटे रहे फिर उनके मध्यसफ़ बंदी भी हुई, जंग भी हुई। मुस्लमान ग़ालिब आ गए और बनू मुस्तलक़ शिकस्त खा गए। (उद्धृत अल् बारी भाग 7 पृष्ठ 547) क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची अर्थात पहले जब हमला हुआ तो वे ग़फ़लत की हालत में थे जैसे इमाम बुख़ारी ने वर्णन किया है लेकिन फिर उन्होंने सफ़ बंदी इत्यादि की और फ़रीक़ैन के माबैन जंग हुई जैसा कि जीवनी लेखकों ने वर्णन किया है।

इस हवाले से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन दोनों वाक़ियात की सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में भी जोड़ किया है जो इस तरह है। आप जीवनी लेखकों और सही बुख़ारी की रिवायत का वर्णन करते हुए वर्णन करते हैं कि :

"इसी ग़ज़वा के विषय में सही बुख़ारी में एक रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम ने बनू मुस्तलक़ पर ऐसे वक़्त में हमला किया था कि वे ग़फ़लत की हालत में अपने जानवरों को पानी पिला रहे थे। परंतु ग़ौर से देखा जाए तो ये रिवायत इतिहासकार की रिवायत के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि यह दरहक़ीक़त दो रिवायतें दो मुख़्तलिफ़ वक़्तों से ताल्लुक़ रखती हैं। अर्थात वाक़िया इस प्रकार है कि जब इस्लामी लश्कर बनू मुस्तलिक़ के क़रीब पहुंचा तो उस वक़्त चूँकि उनको यह मालूम नहीं था कि मुस्लमान बिल्कुल क़रीब आ गए हैं। (जबकि उन्हें इस्लामी लश्कर की आने की सूचना ज़रूर हो थी) वे इतमीनान के साथ एक बे-तरतीबी की हालत में पड़े थे और इसी हालत की तरफ़ बुख़ारी की रिवायत में इशारा है लेकिन जब उनको मुस्लमानों के पहुंचने की इत्तिला हुई तो वे अपनी मुस्तक़िल साबिक़ा तैयारी के मुताबिक़। "पहले उन्होंने जंग करने की तैयारी की हुई थी। "फ़ौरन सफ़ बंद हो कर मुक़ाबला के लिए तैयार हो गए और यह वह हालत है जिसका वर्णन इतिहासकार ने किया है। इस मतभेद की यही तशरीह अल्लामा इब्ने हिज्र और कुछ दूसरे मुहक़्क़िक़ीन ने की है और यही दुरुस्त मालूम होती है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 559)

इस ग़ज़वा में एक सहाबी हज़रत हशशाम बिन सुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए थे।

उनके वाक़िया में लिखा है कि यह केवल एक सहाबी शहीद हुए और यह भी ग़लती से एक मुस्लमान के हाथ ही शहीद हुए थे। उनका नाम हज़रत हशशाम बिन सुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हो था। उन्हें एक अंसारी सहाबी हज़रत ओस रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुशरेकीन में से समझा और ग़लती से शहीद कर दिया।

हशशाम रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बीला में से थे।

हिशाम बिन सुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वाक़िया इस तरह पेश आया कि ये दुश्मन की तलाश में निकले हुए थे। जब वह वापिस आ रहे थे तो उस वक़्त तेज़ आंधी चल रही थी और फ़िज़ा गर्द-ओ-ग़ुबार से अटी हुई थी। इस हालत में उनका सामना अंसारी सहाबी हज़रत ओस रज़ियल्लाहु अन्हो से हुआ। वह उन्हें पहचान नहीं सके। वे समझे कि यह मुशरेकीन में से हैं और हशशाम रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमला करके उन्हें शहीद कर डाला। हशशाम रज़ियल्लाहु अन्हो का भाई जो कि मक्का में मुक़ीम था और उस का नाम मिक्यस बिन सुबाबा था वह मदीना आया और इस्लाम क़बूल कर लिया और अपने भाई के क़तल की जो कि क़तल गलती से था, ग़लती से क़तल हुआ था उसकी दियत का मुतालिबा किया जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हशशाम रज़ियल्लाहु अन्हो के भाई मिक्यस बिन सुबाबा को हज़रत ओस रज़ियल्लाहु अन्हो से दियत दिलवा दी जो उसने ले ली लेकिन दियत लेने के बाद मिक्यस ने हज़रत ओस रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने भाई के क़तल की वजह से क़तल कर दिया और मुर्तद हो कर क़ुरैश से जा मिला। लगता है ये प्लैनिंग कर के आया था। इस बाग़ियाना कार्य पर जो कि अरब के आम दस्तूर के भी ख़िलाफ़ थी कि दियत लेने के बावजूद फिर क़तल करना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस नाहक़ क़तल के क़िसास में इस को क़तल करने का फ़ैसला दिया। इसलिए एक सहाबी नुमेल ने फ़तह मक्का के रोज़ मिक्यस को किया।

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 248 प्रकाशन दारुल मारूफ़ बेरूत 2000 ई.)

(किताब अल् मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1 पृष्ठ 407-408 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई.)

इस जंग के दौरान फ़रिश्तों के ज़रीया ताईद का भी वर्णन मिलता है। उम्मुल मौमेनीन हज़रत जवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए हम मुरेसी पर थे। मैंने अपने पिता को सुना वह कह रहे थे इतना बड़ा लश्कर आ गया है जिसका मुक़ाबला करने की ताकत हम में नहीं और मैं ख़ुद इतने ज़्यादा लोग, हथियार और घोड़े देख रहे थे कि मैं वर्णन नहीं कर सकती। हज़रत हज़रत जवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने जब इस्लाम क़बूल किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से शादी करली और हम वापस आ गए तो मैं मुस्लमानों को देखने लगी। वह मुझे पहले की तरह ज़्यादा संख्या में नज़र नहीं आए जो जंग के दौरान नज़र आ रहे थे। तो मैंने जाना यह अल्लाह तआला की तरफ़ से रोब था जो वे मुशरेकीन के दिलों में डालता है।

बनू मुस्तलिक़ में से एक शख़्स जो बाद में मुस्लमान हो गया था वह कहता था हमने सफ़ैद मर्द देखे जो अब अर्थात स्याह-ओ-सफ़ैद घोड़ों पर सवार थे। हमने न उन्हें पहले और न बाद में देखा।

(इन्साईकलोपीडीया भाग 7 पृष्ठ 164-165 दारुस्सलाम रियाज़)

माल-ए-ग़नीमत के विषय में लिखा है कि ग़नीमत के ऊंटों की संख्या दो हज़ार थी। बकरियों की संख्या पाँच हज़ार थी और क़ैदियों की संख्या दो सौ घरानों पर मुश्तमिल थी।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 346 दारुल् कुतुब इल्मिया बेरूत)

कुछ इतिहासकार ने लिखा है कि क़ैदियों की संख्या सात सौ से भी ऊपर थी।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 379 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बुरेदा बिन हुसैब को इन क़ैदियों का निगरान निर्धारित किया। उनके पास जो माल-ओ-मता और असलाह था उसे जमा कर लिया गया। जानवरों को हाँक कर लाया गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन पर अपने ग़ुलाम हज़रत शुक्रान को निगरान निर्धारित किया। ख़ुमस और मुस्लमानों के हिस्सों पर हज़रत महमिया बिन जज़आ रज़ियल्लाहु अन्हो को निगरान निर्धारित किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सारे माल-ए-ग़नीमत में से ख़ुमस निकाला। ख़ुमस अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ माल-ए-ग़नीमत में से वह पांचवां हिस्सा है जो अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीबी रिश्तेदारों और मुश्तर्क इस्लामी ज़रूरियात के लिए अलग किया जाता है। क़ैदियों को लोगों में तक़सीम कर दिया गया और सामान जानवरों और भेड़ बकरियों को भी तक़सीम कर दिया गया।

(किताब अल् मग़ाज़ी वाक़दी भाग 1 पृष्ठ 410 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई.)

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ : 88)

हज़रत जवीरह रज़ियल्लाहु अन्हो के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अक़्द में आने की भी घटना लिखी है जैसा कि पहले मैंने वर्णन किया।

"क़बीला बनू मुस्तलिक़ के जो क़ैदी गिरफ़्तार हुए थे उनमें इस क़बीला के सरदार हारिस बिन अबी ज़रार की बेटी बर्रा भी थी' जिनका नाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तबदील कर के जुवेरिया रख दिया था "जो मुसाफ़े बिन सफ़वान के अक़्द में थी जो ग़ज़वा मुरेसिया में मारा गया था। इन क़ैदियों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हसब-ए-दसतूर मुस्लमान सिपाहियों में तक़सीम फ़र्मा दिया था और इस तक़सीम की दृष्टि से बुरा बिंत-ए-हारिस एक अंसारी सहाबी साबित बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो की सुपुर्दगी में दी गई थी। बुरा ने आज़ादी हासिल करने के लिए साबित बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ मुकातबत (पत्राचार) के तरीक़ पर यह समझोता किया।"

मुकातबत कहते हैं कि कोई ग़ुलाम या लौंडी अपने मालिक से यह अनुबंध कर ले कि वह एक निर्धारित रक़्म अदा कर के आज़ाद हो जाएगी। बहरहाल उन्होंने समझौता किया "कि वह अगर उसे इस क़दर रक़्म' जो रक़्म निर्धारित थी वह 9 औक़िया सोना था जो तीन सौ साठ दिरहम बनते हैं। "फ़िद्या के तौर पर अदा कर दे तो आज़ाद समझी जाए। इस समझौता के बाद बर्रा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और सारे हालात सुनाए। और यह जतला कर कि मैं बनू मुस्तलक के सरदार की लड़की हूँ फ़िद्या की रक़्म की अदायगी में आपकी सहायता चाही। इस की कहानी से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत प्रभावित हुए और ग़ालिबन यह विचार करके कि :

चूँकि वह एक मशहूर क़बीला के सरदार की लड़की है शायद उस के ताल्लुक़ से इस क़बीला में तब्लीग़ी आसानियां पैदा हो जाएं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरादा फ़रमाया कि उसे आज़ाद करके उस के साथ शादी लें।

इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे ख़ुद अपनी तरफ़ से पैग़ाम दिया और उस की तरफ़ से रजामंदी का इज़हार होने पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पास से इस के फ़िद्या की रक़्म अदा फ़र्मा कर उसके साथ शादी कर ली। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब यह देखा कि उनके आका सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू मुस्तलक की रईस ज़ादी को पत्नी का अधिकार अता फ़रमाया है तो उन्हों ने इस बात को ख़िलाफ़ शान नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समझा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ससुराल वालों को अपने हाथ में क़ैद रखें और इस तरह एक सौ घराने यानी सैंकड़ों क़ैदी बिना फिद्या के सहसा आज़ाद कर दिए गए।

इसी वजह से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं कि जवीरा रज़ियल्लाहु अन्हा .. अपनी क़ौम के लिए निहायत मुबारक वजूद साबित हुई है। इस रिश्ता और इस एहसान का यह नतीजा हुआ कि बनू मुस्तलिक़ के लोग बहुत जल्द इस्लाम की तालीम से प्रभावित हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हल्क़ा-बगोशों में दाख़िल हो गए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ : 570-571)

एक रिवायत यह भी है कि हज़रत जवीरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पिता हज़रत हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी बेटी का फ़िद्या लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और फ़िद्या देकर हज़रत जवीरा रज़ियल्लाहु अन्हा को आज़ाद करवाने के बाद वह ख़ुद भी इस्लाम ले आए और फिर उस की शादी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हुई।

सीरत इब्ने हशशाम में है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलक़ से मदीना वापस आए तो हज़रत जवीरा रज़ियल्लाहु अन्हा का बाप हारिस बिन अबी ज़रार अपनी बेटी का फ़िद्या देने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया। जब वह वादी अक़ीक़ में पहुंचा तो उसने वह ऊंट जो अपनी बेटी के फ़िद्या में देने के लिए अपने साथ लाया था उनमें

से दो ऊंट उसे बहुत पसंद आए थे। उसने उन्हें वादी अक़ीक़ की एक घाटी में छिपा दिया। फिर वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। उसने कहा हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) आपने मेरी बेटी को गिरफ़्तार कर लिया है। यह उस का फ़िद्या है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया : वे दो ऊंट कहाँ हैं जो तुमने अक़ीक़ की अमुक अमुक घाटी में छुपाए थे? वह इस बात से प्रभवित हुआ हारिस ने कहा : मैं गवाही देता हूँ, कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं। कहने लगा कि अल्लाह की क़सम अल्लाह ही है जिसने आपको इस से आगाह किया है क्योंकि उस वक़्त उन ऊंटों के पास सिवाए हारिस के और कोई भी नहीं था। फिर हारिस ने इस्लाम क़बूल कर लिया और इस के साथ ही उनके दो बेटों ने और उनकी क़ौम के कुछ लोगों ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया।

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने हशशाम पृष्ठ ६७४,६७३ दारुल् कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक रिवायत में यह वर्णन मिलता है कि हज़रत जवीरा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई अब्दुल्लाह बिन हारिस अपनी क़ौम बनू मुस्तलिक़ के क़ैदियों का फ़िद्या लेकर आए थे परंतु रास्ते में उन्होंने ऊंटों और हब्शा की एक बांदी को एक स्थान पर छिपा दिया। इसके बाद अब्दुल्लाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर क़ैदियों के फ़िद्या के विषय में बात की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ ठीक है परंतु तुम फ़िद्या के लिए क्या लेकर आए हो। उसने कहा मैं तो कुछ भी नहीं लाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तो वे जवान ऊंट और स्याह फ़ाम बांदी कहाँ है जिन को तुम ने अमुक अमुक जगह छिपा दिया है? यह सुनते ही अब्दुल्लाह ने कहा: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह एक है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और कहा कि उस वक़्त मेरे साथ कोई नहीं था जबकि मैंने फ़िद्या के इस माल को छुपाया था और न ही इस वाक़िया के बाद मुझसे पहले आप तक कोई दूसरा शख़्स पहुंचा है। उद्देश्य उस के बाद वह मुस्लमान हो गया।

(फ़िल् इस्तेयाब फ़ी मारफ़ अल् आसहाब भाग 3 पृष्ठ 20 दारुल् कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में भी लिखा है कि :

"हज़रत जुवेरिया की शादी के विषय में एक रिवायत यह भी आती है कि जब उनके पिता उन्हें छुड़ाने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फ़ैज़-ए-सोहबत से मुस्लमान हो गए और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से पैग़ाम मिलने पर "अर्थात रिश्ता का जो पैग़ाम भेजा था "उन्होंने स्वयं अपनी इच्छा से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अपनी लड़की की शादी कर दी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ : 571)

हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से तीन रोज़ पहले मैंने ख़ाब में देखा अर्थात जब वह वहां बनू मुस्तलिक़ की तरफ़ गए कहती हैं मैं ने ख़ाब में देखा कि चांद यसरिब से चला है और मेरी गोद में आ गिरा है।

मैंने नापसंद किया कि किसी को अपना ख़ाब वर्णन करूँ यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। जब हमें क़ैदी बना लिया गया तो मुझे इस ख़ाब के पूरा होने की उम्मीद हुई। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे आज़ाद किया और मुझ से निकाह कर लिया ख़ुदा की कसम! मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अपनी क़ौम के बारे में बात नहीं की थी। मैंने क़ौम की रिहाई के बारे में कोई सिफ़ारिश नहीं की। यहाँ तक कि मुस्लमानों ने ख़ुद ही उन्हें आज़ाद कर दिया। मुझे इलम नहीं हुआ यहां तक कि मेरी एक फूफ़ुज़ाद बहन ने मुझे बताया तो इस पर मैंने अल्लाह तआला की तारीफ़ की।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 347 दारुल् कुतुब इल्मिया बेरूत)

इब्ने हशशाम ने लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का हक़ महर चार-सौ दिरहम निर्धारित किया।

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने हशशाम पृष्ठ 674 दारुल् कुतुब इल्मिया बेरूत)

बहरहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस ग़ज़्वा से मुज़फ़्फ़र-ओ-मंसूर कामयाब-ओ-कामरान मदीना वापस तशरीफ़ लाए।

और कुल अट्ठाईस रोज़ मदीना से बाहर रहे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 354 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक़ से वापसी पर मुनाफ़ेक़ीन के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सलूल के निफ़ाक़ का ऐलानीया और बाग़ियाना इज़हार जो उसने किया था उसका भी तारीख़ में वर्णन मिलता है :

इस का विस्तार यूं है कि बनू मुस्तलक़ से लड़ाई ख़त्म हो गई और मुस्लमान अभी मरीसी के कुँवें पर मौजूद थे इस कुँवें का पानी बहुत कम था। डोल डाला जाता था तो आधा भर कर आता था। कुँवें पर सिनान बिन वबर् जोहनी आया जो बनू ख़ज़रज का साथी था। उस वक़्त पानी पर मुहाजेरीन और अंसार की एक जमाअत मौजूद थी। सिनान बिन वबर् जुहनी ने अपना डोल डाला और उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के नौकर जाहजा बिन मसऊद गफ्फारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी पानी निकालने के लिए अपना डोल डाला। सिनान और जहाजा के डोल टकरा गए जिस पर ये दोनों शख़्स आपस में उलझ पड़े। पानी थोड़ा था किसी को पूरा पानी नहीं मिला। जहाजा ने सनान को मारा और उसका ख़ून बहने लगा तो सनान ने मदद के लिए आवाज़ दी। हे अंसार! और जहाजा ने आवाज़ दी हे मुहाजेरीन और एक रिवायत में है हे क़ुरैश! तू दोनों क़बीलों की एक जमाअत आ गई और हथियार निकाल लिए। क़रीब था कि बड़ा फ़ित्ना बरपा हो जाता लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़ौरन इत्तिला मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस मुआमले को ख़त्म करवाया। बहरहाल उस का विस्तार की कुछ रिवायत हैं।

सही बुख़ारी की एक रिवायत के मुताबिक़ झगड़े का कारण यह वर्णन हुआ है कि मुहाजेरीन में से एक शख़्स ने अंसार में से एक शख़्स की पुश्त पर टांग मारी। इस पर इस अंसारी ने कहा हे अंसार मदद के लिए आओ और इस मुहाजेर ने कहा हे मुहाजेरीन! मदद के लिए आओ। इन दोनों के मध्य लड़ाई का कारण पानी का हौज़ था जिससे अंसारी की ऊंटनी ने पानी पिया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : यह जाहेलियत की सदा कैसी है? क्या बातें कर रहे हो तुम लोग? यह जाहिलों वाली बातें हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सारा हाल बताया गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

तुम ऐसी बात को छोड़ दो। यह भाई चारे को ख़त्म करने वाली है। हर आदमी को चाहिए कि वह अपने भाई की मदद करे चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम। अगर वह ज़ालिम हो तो इस को ज़ुलम से रोक दे और अगर मज़लूम हो तो इस की मदद करे।

मुहाजेरीन की एक जमाअत ने हज़रत उबअदा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हो से बातचीत की और अंसार की एक जमाअत ने सिनान से बातचीत की तो सिनान ने अपना हक़ छोड़ दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ये सारी बातें उन तक पहुंचाएं। बात की और समझाया तो सिनान ने अपना हक़ छोड़ दिया।

अब्दुल्लाह बिन उबैय अपने दस मुनाफ़िक़ साथियों के साथ बैठा हुआ था। वहां हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे लेकिन वे अभी कम उमर थे या कुछ रिवायात के मुताबिक़ अभी बालिग़ नहीं हुए थे जबकि कुछ रिवायात के मुताबिक़ वह बालिग़ थे। अब्दुल्लाह बिन उबैय को जहजाह की यह सदा सुनाई दी कि हे क़ुरैश के लोगो उसे शदीद गुस्सा आया। उसने कहा ख़ुदा की कसम! मैंने आज जैसा दिन कभी नहीं देखा। कहने लगा ख़ुदा की कसम! मुझे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना आने के वक़्त से ही यह दीन सख़्त नापसंद था लेकिन मेरी क़ौम ने मुझ पर ग़लबा पा लिया और उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। क़ुरैश के लोग हम पर हाकिम हो गए और हमारे शहर में उनकी कसरत हो गई और हमारे एहसानात की नाकदरी की। उसने बड़ी गंदी मिसाल दी कि ये क़ुरैश के अफ़राद ऐसे हैं कि जिस तरह कहा जाता है कि अपने कुत्ते को मोटा करो ताकि वे तुम्हें खा जाए। कहने लगा मेरा तो गुमान था कि मैं इस तरह की पुकार की सदा आने से क़बल मर गया होता जैसी सदा जहजाह ने

दी थी। मैं यहां मौजूद हूँ मुझ से तो ये सब कुछ बर्दाश्त नहीं हो सकता। अल्लाह की क़सम! अगर हम मदीना पहुंच गए तो सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला शख़्स सबसे ज़्यादा ज़लील आदमी को वहां से बाहर निकाल देगा। फिर उसने अपनी क़ौम के मौजूदा लोगों की तरफ़ मुतवज्जा होते हुए कहा। ये तुम लोगों ने ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुलम किया है। तुमने उन्हें अपने शहर में ठहराया और वे वहीं ठहर गए। तुमने अपने अम्वाल में से उनके हिस्से निर्धारित किए यहां तक कि वे मालदार हो गए। ख़ुदा की कसम अब भी तुम अपने हाथ रोक लो तो वे तुम्हारा शहर छोड़ कर किसी और शहर चले जाएंगे। वे लोग फिर भी इस पर राज़ी नहीं हुए जो तुम लोगों ने उनके लिए किया था। उसने बड़ा भड़काने की कोशिश की कि मुहाजेरीन तो उस पर राज़ी नहीं हुए जो तुमने उन पर एहसान किया यहां तक कि तुमने अपनी जानों को मौत का निशाना बनाया। तुम लोग इस अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ातिर क़तल हुए और तुम लोगों ने अपनी औलादों को यतीम किया। इस के नतीजा में तुम थोड़े हो गए और वे लोग बढ़ गए।

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब अब्दुल्लाह बिन उबैय की ये बात सुनी कि अगर हम मदीना पहुंच गए तो सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला शख़्स सबसे ज़्यादा ज़लील शख़्स को इस से बाहर निकाल देगा तो उन्होंने वहीं खड़े होके उसे कहा कि

अल्लाह की क़सम! तू ही अपनी क़ौम में ज़लील है। तू ही कमतर है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रहमान ख़ुदा की तरफ़ से ग़लबा और शान रखने वाले हैं और मुस्लमानों की तरफ़ से ताक़त रखने वाले हैं। ग़ैरत दिखाई उन्होंने

इस पर इब्न-ए-उबैय ने उसे कहा तो ख़ामोश हो जा। मैं तो केवल हंसी मज़ाक़ और खेल तमाशे की बातें कर रहा था। ख़ौफ़ भी आया उस को। डर गया। ज़ैद बिन अर्कम रज़ियल्लाहु अन्हो ये सारी बातें सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुंच गए और उस वक़्त आपके पास मुहाजेरीन और अंसार सहाबा की एक जमाअत भी मौजूद थी। ज़ैद ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इब्ने उबैय की सारी बात बता दी।

बुख़ारी की एक रिवायत में है कि ज़ैद बिन अर्क़म ने अपने चचा से इस वाक़िया का वर्णन किया और चचा ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात बताई। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ौरन ज़ैद को तलब किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद की बात को नापसंद किया और आपके चेहरा मुबारक का रंग बदल गया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया: हे लड़के! शायद तुझे इब्न-ए-उबै पर ग़ुस्सा है। ज़ैद ने कहा नहीं। हे रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। अल्लाह की क़सम मैंने यह बात इस से सुनी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : शायद तुम्हारे सुनने में ग़लती हो गई हो। ज़ैद ने कहा अल्लाह की क़सम हे रसूलुल्लाह! ऐसा नहीं है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : शायद तुम पर मुआमला मुश्तबा हो गया हो। ज़ैद ने कहा हे रसूलुल्लाह अल्लाह की क़सम ऐसा नहीं है।

लश्कर में इब्न-ए-उबैय की बात फैल गई और लोगों का मौज़ू बेहस यही बात थी और अंसार के लोग ज़ैद की निंदा और तंबी करने लगे और कहने लगे कि तू ने अपनी क़ौम के सरदार पर यह इल्ज़ाम लगाया है। तो उसके ख़िलाफ़ ऐसी बात कहता है जो उसने नहीं कही। ज़ैद के चचा ने भी ख़फ़गी का इज़्हार किया। उन्होंने कहा तुम्हें क्या सूझी? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हें झूठा क़रार दिया और तुमसे नाराज़ हो गए। ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : अल्लाह की क़सम! जो उसने कहा मैंने ख़ुद सुना है।

अल्लाह की क़सम! ख़ज़रज में अब्दुल्लाह बिन उबैय से ज़्यादा मुझे कोई शख़्स प्रिय नहीं था। अगर मैं ये बात अपने बाप से भी सुनता तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़रूर बताता।

अगर ऐसी बात जो अब्दुल्लाह बिन उबैय ने कही थी। मुझे तो कोई परवाह नहीं थी। उनका ईमान बड़ा पुख़्ता था। कहता है कि अगर मेरा बाप भी कहता तो मैं ये बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़रूर बताता और मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्यी नाज़िल करेगा जो मेरी बात की तसदीक़ करेगी। ज़ैद इस सूरत-ए-हाल से सख़्त दुखी हुए। वह ख़ुद वर्णन करते हैं कि मुझे ऐसा ग़म पहुंचा कि ऐसा गम मुझे कभी नहीं पहुंचा था। मैं अपने घर बैठा रहा। यहां घर से मुराद उनकी बैरूनी क़ियामगाह है जहां उन्हों ने कैंप लगाया हुआ था। मदीना वाला घर नहीं है क्योंकि यह सारा वाक़िया ही मदीना से बाहर का है। ज़ैद ने लोगों से बचने के लिए उनके सामने आना छोड़ दिया। उन्हें डर था कि लोग उन्हें देख कर कहें कि तुमने झूठ बोला है।

दूसरी तरफ़ मज्लिस में मौजूद अंसार ने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद और ज़ैद को दिया गया उत्तर सुना तो उनमें से चंद लोग वहां से उठे और अब्दुल्लाह बिन उबैय के पास आकर उसको ख़बर दी और ओस बिन ख़ौली ने कहा हे अबू हुबाब यह उस की कुनिय्यत थी कि अगर तू ने यह बात कही थी तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बता देता कि वह तेरे लिए अस्तग़फ़ार करें और तू उस का इंकार न कर। कहीं तेरे बारे में कोई वही नाज़िल हो कर तेरी तक़ज़ीब न कर दे। और अगर तू ने यह बात नहीं कही थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ और उनको कारण वर्णन कर और कसम खा कि तू ने यह नहीं कहा था। तो उसने अल्लाह की क़सम खाई कि उसने कुछ नहीं कहा था। फिर इब्ने उबैय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गया। उस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हे इब्ने उबैय अगर ये बात तू ने कही थी तो तौबा कर ले तू वह क़समें खाने लगा कि ज़ैद ने जो कुछ कहा मैंने वह नहीं कहा था।

एक दूसरी रिवायत में है कि जब अब्दुल्लाह बिन उबैय को ख़बर हुई तो वह ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आया और उसने अल्लाह की क़सम खाई और कहा कि ज़ैद ने जो बात आपको बताई है वह मैंने नहीं कही और एक तीसरी रिवायत यह भी मिलती है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद अब्दुल्लाह बिन उबैय और उस के साथियों को बुला भेजा तो उन्होंने क़सम खाई कि उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा। इस पर हाज़ेरीन में से अंसार सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा उम्मीद है बच्चे को बात में वहम पैदा हो गया हो और वह बात याद न रही हो जो इब्न-ए-उबैय ने कही थी। यह बात उन्होंने इब्न-ए-उबैय के दिफ़ा में कही क्योंकि वह अपनी क़ौम में सम्मानित और मर्तबा वाला था। कुछ लोगों ने गुमान किया कि ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो सच्च कह रहा है और कुछ ने इस के बारे में बद-गुमानी की। कुछ ने तो यक़ीन कर लिया कि ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो चाहे छोटी उम्र का है लेकिन सच्च बात ही कह रहे हैं। बहरहाल अक्सर जो बड़े थे वे इस को ग़लत समझते थे।

हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब इब्न-ए-उबैय का वाक़िया हुआ तो मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दरख़्त के साय में तशरीफ़ फ़र्मा थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक पूर्ण काला गुलाम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पीठ दबा रहा था। मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! शायद आपकी कमर में दर्द है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पिछले रात मुझे ऊंटनी ने गिरा दिया था।

इन बातों के बाद फिर मैं असल बात की तरफ़ आया। कहते हैं मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे इजाज़त दें कि मैं इब्न-ए-उबै की गर्दन मार दूं। उसे क़तल कर दूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अगर मैं सहाबा को उस के क़तल का हुक्म दूं तो वे इस को क़तल कर देंगे तो मदीना में बहुत से लोगों को यह नागवार गुज़रेगा। मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप मुहम्मद बिन मसल्मा को हुक्म दें कि वे इस को क़तल कर दे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया : लोग ये बातें न करते फिरें कि मैं अपने साथियों को क़तल कर रहा हूँ। मैंने अर्ज़ किया फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों को रवानगी का हुक्म दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है।

एक रिवायत में वर्णन है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि कूच करने का ऐलान करो। यह दिन का वह वक़्त था जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उमूमन सफ़र नहीं किया करते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी यह ख़्याल था कि उसने बात ज़रूर की है और इसी को पूरा करने के लिए उन्होंने कहा अच्छा फिर यह कहता है कि ज़लील आदमी को निकाल देगा तो चलो सफ़र करते हैं। वापस

मदीना जाते हैं देखते हैं क्या करता है। बहरहाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने लोगों में रवानगी का ऐलान किया। उस वक़्त शदीद गर्मी थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आदत यह थी कि ठंडे वक़्त में सफ़र करते थे लेकिन जब इब्न-ए-उबैय की ख़बर आई तो उस वक़्त कूच किया और सबसे पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को साद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो मिले और कुछ ने कहा कि उसेद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो मिले। उन्होंने कहा اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया ने फ़रमाया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ. उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप ने इस गर्मी में इस वक़्त में रवानगी इख़्तेयार की है जिसमें आपकी आदत रवानगी की नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुझ तक वे बातें नहीं पहुंचीं जो तुम्हारे साथी ने कही हैं? उन्होंने पूछा हे रसूलुल्लाह! कौन सा साथी? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :अब्दुल्लाह बिन उबैय ने कहा है कि जब वह मदीना वापस लौटेगा तो ज़्यादा इज़्ज़त वाला शख़्स मदीना से ज़्यादा ज़िल्लत वाले को निकाल देगा। उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अगर आप चाहें तो इस को मदीना से निकाल दें क्योंकि वह ज़लील तरीन और आप बहुत इज़्ज़त वाले हैं और इज़्ज़त अल्लाह के लिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए और मोमेनीन के लिए है। फिर अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! इस पर नरमी करें। अल्लाह की क़सम अल्लाह तआला आपको मदीना में लाया और उसी क़ौम उस के लिए ताजपोशी की तैयारी कर रही थी। अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मदीना ले आया तो इस का ख़्याल है कि आपने उस की बादशाहत छीन ली।

(सही बुख़ारी किताब तफ़सीर क़ुरआन हदीस 4904-4905)

(हिउल्सारी मुक़द्दमा फ़तह अल् बारी पृष्ठ 468 क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची)

(सीरत अलहलबेह जल्द2 सफ़ा389 दारुल् कुतुब इल्मिया बेरूत

(फ़तह अल्बारी शरह सही अल् बुख़ारी भाग 8 पृष्ठ 645 आलेमुल कुतुब)

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 7 पृष्ठ 182 दारुल्सलाम रियाज़)

(सब्लुल् दाहुवल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 348-350 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद (अनुवादक भाग 4 पृष्ठ 782 ज़ावीया पब्लिशरज़ लाहौर)

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने हशशाम पृष्ठ 670-671 दारुल् कुतुब इल्मिया बेरूत)

बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो की बात का यक़ीन आ गया था कि उसने सही कहा है और अब्दुल्लाह झूठ बोल रहा है लेकिन इस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मस्लिहतन ख़ामोश रहे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा चलो मदीना जा कर देखते हैं कौन ज़लील है और कौन इज़्ज़त वाला है। लेकिन बहरहाल आख़िर में फिर यही साबित हुआ कि इस का क़सूर था और उसने ये बातें कही थीं। इसका विस्तार जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखी है वह भी इन शा अल्लाह तआला आइन्दा वर्णन करूँगा।

अगले जुमा इंशाअल्लाह बर्तानिया का जलसा सालाना भी शुरू होगा। इसके लिए भी दुआ करें।

अल्लाह तआला हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए और समस्त कर्मियों को आला अख़लाक़ दिखाते हुए और क़ुर्बानी की भावना से अपने फ़रायज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जो मेहमान आए हैं उनको भी अपनी हिफ़ाज़त में यहां रखे। जो सफ़र में हैं, आने की तैयारी में हैं, सफ़र शुरू करने वाले हैं या जिन्हों ने भी आना है सब पर अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाए। उनको हिफ़ाज़त से लेकर आए।

कुछ मरहूमीन का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा मैं उनका पढ़ाऊंगा उनमें पहला जनाज़ा है सलीमा बानो साहिबा जो हमीद कौसर साहिब नाज़िर दावत इल्लल्लाह शुमाली हिंद की पत्नी थीं। पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन मरहूमा मूसिया थीं। मुहम्मद हमीद कौसर साहिब लिखते हैं कि यह अब्दुलग़नी साहिब मरहूम भदरवाह जम्मू कश्मीर की बेटी थीं जिन्हों ने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के द्वारा 1935 ई. में बैअत की थी। जलसा सालाना कादियान में पहाड़ी और बर्फ़ीली रास्तों पर पैदल चल कर और कुछ हिस्सा टांगे पर सवार हो कर तक़सीम-ए-मुल्क तक कादियान में हाज़िर होते थे। बड़ा शौक़ था और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़िताब सुनते थे। अपनी पत्नी के बारे में कहते हैं कि जो हमें वाक़िफ़ ज़िंदगी को गुज़ारा अलाउंस मिलता था बहुत मामूली था लेकिन इंतेहाई किफ़ायत-शआरी से गुज़ारा करती थीं और मेहमानों की मेहमान-नवाज़ी भी करती थीं और कहती थीं कि

अल्लाह तआला ने इस अलाउंस में ग़ैरमामूली बरकत अता फ़रमाई है। क़नाअत थी कभी शिकवा नहीं किया। ये उन लोगों के लिए भी सबक़ है जो कई दफ़ा शिकवे करते हैं।

फिर कौसर साहिब कहते हैं क्योंकि श्रीनगर में पहली पोस्टिंग थी वहां से मेरा तबादला बंबई में हो गया तो वहां बंबई में बतौर सदर लजना ख़िदमत बजा लाती रहीं। फिर कबाबीर में तबादला हो गया। वहां उन्होंने कहा कि अरबी सीखना मेरे लिए तो मुश्किल है तो मैं औरतों से जो बोल-चाल की अरबी है वह सीख लेती हूँ और फिर वह सीखी और बड़ी जल्दी सीखी और उनकी तालीम-ओ-तर्बीयत में बड़ा अहम किरदार अदा किया।

86 ई. से 97 ई. तक ग्यारह वर्ष सदर लजना इमाइल्लाह कबाबीर के तौर पर ख़िदमत बजा लाती रहीं। लजना इमाइल्लाह को अज़ सर-ए-नौ मुनज़्ज़म किया। इजतेमा के आयोजित करने का सिलसिला शुरू करवाया। इजतेमा हो रहा था तो इस ज़िमन में हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अल् राबे ने भी उनकी तारीफ़ की थी कि लजना इमाइल्लाह जमाअत कबाबीर का इजतेमा हो रहा है और बताया कि उनका पांचवां इजतेमा है। फिर फ़रमाया कि लजना इमाइल्लाह कबाबीर सारी अरब महिलाओं पर मुश्तमिल लजना है। केवल एक उनमें भारत से गई हुई कश्मीर की महिला भी हैं परंतु वह भी अब बिल्कुल अरबों की तरह बन चुकी हैं। घुल मिल के उन्होंने उनकी तर्बीयत की। फिर कहते हैं 1998 ई. में मैं वापिस आगया तो इंडिया मेरे साथ आ गईं और जब तक सेहत और हालात ने इजाज़त दी, मरहूमा तक़रीबन रोज़ाना बैतुद्दुआ और मस्जिद मुबारक और बैतुल् ज़िकर और बहिश्ती मक़बरा में नवाफ़िल और दुआ के लिए जाया करती थीं।

शरीफ़ ऊदा साहिब अमीर कबाबीर लिखते हैं कि मरहूमा को पहली सदर लजना निर्धारित किया गया। नियमित छः वर्ष तक यह ज़िम्मेदारी अदा करती रहीं। कौसर साहिब ने तो ज़्यादा लिखा है। उन्होंने छः वर्ष लिखा है। बहरहाल आख़िर तक वे रहें जब तक वहां थीं। मरहूमा ने मुख़्तलिफ़ दीनी दरसों और दीनी सरगर्मीयों के द्वारा लजना की तालीम-ओ-तर्बीयत में अहम किरदार अदा किया। मरहूमा अपने हुस्न-ए-सुलूक और ख़ुशअख़लाक़ी के ज़रीया जमाअत कबाबीर के साथ अच्छे संबंध बनाने में कामयाब हुईं। जल्द ही अरबी बोल-चाल सीख ली और जमाअत के बेटों और बेटीयों में यह घुल गईं जैसे वह उनमें से एक हूँ। और कहते हैं पिछले बीस सालों में कादियान वापसी के बाद से वफ़ात तक कबाबीर की महिलाओं के साथ फिर भी उन्होंने ताल्लुक़ रखा और जब वहां थीं तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की देख-भाल किया करती थीं। मेहमान-नवाज़ी में ख़ास वस्फ़ था। इसी तरह जमाअती सैंटर की सफ़ाई की तरफ़ भी बहुत तवज्जा देती थीं। पीछे रहने वालों में एक बेटी और दो बेटे शामिल हैं। एक बेटे उनके मुरब्बी हैं अताउल मजीद मुबश्शिर कौसर। यह एम.टी.ए अल् अर्बिया में यहां यूके में ख़िदमत अंजाम दे रहे हैं ख़िदमत बजा ला रहे हैं। बेटी उनकी बुशरा कौसर साहिबा हॉलैंड में हैं डाक्टर एमन ऊदा की पत्नी हैं। लजना इमाइल्लाह हॉलैंड में नैशनल सैक्रेटरी ख़िदमत-ए-ख़लक़ के तौर पर ख़िदमत कर रही हैं। छोटे बेटे शरीफ़ कौसर जो हैं यह कादियान में नायब सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल् अहमदिया भी हैं। मुरब्बी भी हैं और इस के इलावा ऐडीशनल इंचार्ज विभाग एम.टी.ए भी हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी नेकियां उनकी औलाद में जारी रखे।

दूसरा वर्णन नूरुल हक़ मज़हर साहिब का है जो राग़िब ज़ियाउल-हक़ साहिब मुरब्बी सिलसिला तनज़ानिया के पिता थे। लाहौर के थे। पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे।

ाग़िब ज़ियाउल-हक़ साहिब लिखते हैं। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके दादा मुंशी मुहम्मद दीन साहिब के द्वारा से आई थी जो 1905 ई. में अपने चचा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 15-22 August 2024 Issue No. 32-33

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

के हमराह बैअत का शौक़ लिए कादियान पहुंचे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पीछे नमाज़ पढ़ने का भी शरफ़ हासिल हुआ। बैअत की दरख़्वास्त की लेकिन ऐलान किया गया कि हज़रत अकदस की तबीयत ना-साज़ है। बैअत नहीं होगी। इस दिन बैअत नहीं हुई। वापस आ गए फिर हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत क। 1974 ई. में यह किराए के मकान में रहते थे। मुख़ालेफ़ीन ने इस मकान को आग लगा दी। घर का सारा सामान जल गया। कोई पनाह नहीं देता था। फिर एक अहमदी ने अपने घर में पनाह दी और कहते हैं मेरे पिता ने बड़े सब्र और शुक्र से इस छोटे से घर में गुज़ारा किया। कभी उनकी ज़बान पर कोई शिकवा नहीं आया और यह नहीं कहा कि सब कुछ जल गया है इस के मुक़ाबले पर अल्लाह तआला ने कुछ अरसा बाद उनको अपना मकान बनाने की तौफ़ीक़ दी और यह यही कहा करते थे कि 1974 ई. की कुर्बानी का सिला है जो अल्लाह तआला ने दिया है। 1974 ई. में मस्जिद मुग़लपूरा की हिफ़ाज़त कर रहे थे तो ग़ैर अहमदी अहबाब ने मस्जिद पर हमला कर दिया। उन्होंने एक लोहे की सलाख़ आपके सिर पर मारी जिससे ज़ख़्मी हुए और सारी उम्र यह निशान उनके सर पर रहा। कहते हैं मैंने पिता साहिब को हमेशा तहज्जुद में रो रो कर दुआ करते देखा है और नमाज़ों की ख़ास पाबंदी थी। घर नमाज़ सैंटर था। पाँच वक़्त नमाज़ की इमामत कराया करते थे। क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने और नमाज़ों की तरफ़ घर वालों को तलक़ीन करते थे। कहते हैं एक दफ़ा मुहल्ले की मस्जिद के मौलवी ने तक़रीर की कि ये अहमदी जो हैं उनका क़ुरआन अलग है। नमाज़ और तरह पढ़ते हैं तो कहते हैं कि इस दौरान मस्जिद में ही हमारा एक ग़ैर अहमदी हमसाया था वह खड़ा हो गया। उसने कहा मौलवी-साहब आप ग़लत कह रहे हैं क्योंकि पूरी गली में सिर्फ एक घर है जहां क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ आती है और वह नूरुल -हक़ का घर है और वही क़ुरआन पढ़ रहे होते हैं जो हम पढ़ते हैं। आजकल तो मौलवी का ख़ौफ़ इतना है कि यह बात कोई नहीं कह सकता। बहरहाल अपने मुहल्ले में इंतेहाई शरीफ़ बुज़ुर्ग मशहूर थे। आख़िरी बिमारी में भी ग़ैर अहमदी जो लोग थे, सख़्त मुख़ालेफ़ीन वे भी आपका हाल पूछने घर आते थे। इंतेहाई सख़ी दिल और ग़रीबपर्वर थे। बग़ैर किसी को बताए ज़रूरतमंदों को राशन भिजवा दिया करते थे। पीछे रहने वालों में एक बेटा और तीन बेटियां शामिल हैं। एक बेटी अमतुल मतीन महमूद साहिब मुरब्बी सिलसिला की पत्नी हैं। वह भी घाना में होने की वजह से जनाज़ा में शिरकत नहीं कर सकें। वफ़ात के वक़्त वहां नहीं थीं। बेटे राग़िब ज़याउल् हक़ तनज़ानिया में मुरब्बी हैं वह वहां ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं वह भी मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपने पिता के जनाज़ा में शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उन सबको सब्र और हौसला आता फ़रमाए।

अगला वर्णन है अम्तुल हफ़ीज़ निगहत साहिबा जो मुहम्मद शफ़ी साहिब मरहूम रब्वाह की पत्नी थीं। यह भी पिछले दिनों वफ़ात पा गईं। मरहूमा मूसिया थीं और मुबारक तनवीर साहिब मुरब्बी सिलसिला जर्मनी की सास थीं। उनकी बेटी अम्तुल जमील ग़ज़ाला हैं जो जर्मनी की नायब सदर लजना भी हैं।

अम्तुल जमील साहिबा लिखती हैं कि मेरी वालिदा नमाज़ रोज़े की पाबंद थीं। आला सिफ़ात की हामिल, नेक शख़्सियत थीं। कोई दुआ के लिए कहता तो अपने ऊपर लाज़िमी समझ लेतीं और पूरी फ़िक्र और लगाओ से दर्द-ए-दल के साथ उसके लिए दुआओं में लग जातीं। ख़िलाफ़त से इंतेहाई दर्जा का वफ़ा का ताल्लुक़ था। बच्चों को भी इस का दरस दिया करती थीं। जमाअती कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाली थीं और हमें अमली तौर पर सिखाया कि दीन की ख़िदमत ही असल सरमाया है। लजना के मुख़्तलिफ़ ओहदों पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। तब्लीग़ का जुनून की हद तक शौक़ रखती थीं। पैदल ही दूर दराज़ इलाक़ों में तब्लीग़ के लिए निकल जाती थीं। जब तक वहां तब्लीग़ की इजाज़त थी इतनी ज़्यादा मुख़ालेफ़त नहीं थी। मुक़द्दमे ज़्यादा नहीं बनते थे उस वक़्त तब्लीग़ करती रहीं। मैडीकल कैम्पस लगाती थीं होमयोंपैथिक दवाईयां तक़सीम किया करती थीं। उनकी कोशिशों के नतीजा में अल्लाह तआला ने उन्हें पच्चास के क़रीब फल भी अता फ़रमाए। अर्थात लोगों को बैअत करवाने की उनको तौफ़ीक़ मिली। दुनयावी लिहाज़ से तालीम कम थी परंतु इलम हासिल करने का शौक़ था। धार्मिक पुस्तकें पढ़के ही बड़ी मुदल्लिल गुफ़्तगु किया करती थीं और हर शख़्स के ज़हनी मयार के मुताबिक़ उससे बात किया करती थीं। कभी कोई सवाली घर से ख़ाली हाथ नहीं गया। महिलाओं को हमेशा यह कहा करती थीं कि बजाय मांगने के रोज़गार हासिल करने की कोशिश करो। मुख़्तलिफ़ ग़रीब बच्चीयों को अपने घर रखकर उन्हें तालीम भी दिलवाई और फिर उनकी शादियों के अख़राजात ख़ुश-दिल्ली से बर्दाश्त किए और हमेशा उनसे बहुत हुस्न-ए-सुलूक रखा। ग़ज़ाला साहिबा कहती हैं कि मैं जब उनको मिलने गई तो उन्होंने कहा कि तुम वक़्फ़ ज़िंदगी हो इसलिए मैं तुम्हें रोकती नहीं। तुम अपनी रुख़स्त गुज़ार के वापस जाओ। जब बीमारी शदीद थी तो भाई ने भी कहा कि उनको बुला लें तो उन्होंने कहा नहीं वह वक़्फ़ है। उस को रहने दो। पीछे रहने वालों में दो बेटे और दो बेटियां हैं और बहुत सी नवासियाँ, पोते पोतिया हैं जिन सबको किसी न किसी रंग में जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिल रही है। बड़ा नेक माहौल उन्होंने अपने घर में क़ायम किया है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दोनों दामाद भी जमाअती ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं।

अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी नेकियां आगे नसल में भी जारी फ़रमाए।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलगम इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
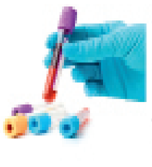
चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad